# सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-मालाका कार्य-क्षेत्र

(१) इस पुस्तक-माला का उद्देश्य, उपयोगी और सामयिक पुस्तकों को प्रकाशित कर, स्वल्प-मूल्य (लागत मात्र) में सुलभ करना है।

(२) इसमें राजनीति, साहित्य, समाज-नीति, शिक्षा, धर्मतत्त्व, विज्ञान, श्रमजीवी और कृषकोपयोगी विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित की जायेंगी।

(३) यह पुस्तक-माला प्रयत्न करेगी कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी का प्रचार गांवों में विशेष रूप से हो और ग्रामीण भाइयों का साहित्य भी सर्वाङ्ग-पूर्ण हो।

(४) यह पुस्तक-माला मौलिक पुस्तकों को प्रकाशित करने का पूर्ण प्रयत्न करेगी, जिस से हिन्दी-संसार में मौलिक लेखकों का जन्म हो और उन्हें प्रोत्साहन मिले।

(५) यह पुस्तक-माला किसी विशेष धर्म से सम्बन्ध रखने वाली विवाद ग्रस्त पुस्तकों को प्रकाशित न करेगी।

## सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-माला के लेखकों के निय

(१) लेखक जो पुस्तक सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-माला
सम्मिलित कराना चाहें उसे, अथवा उसके कु
अंश को, प्रकाशक के पास भेजें ।

(२) पुस्तक का कुछ अंश भेजते समय पूरी पुस्त
की विषयानुक्रमणिका अवश्य भेजना चाहिए ।

(३) पुस्तक को घटाने-बढ़ाने तथा परिवर्तन करने क
अधिकार सम्पादक को होगा । यदि सम्पाद
चाहेंगे तो वे यह काम लेखकों से ही करा सकेंगे

(४) पुस्तकों की भाषा सरल और सुबोध होना चाहिए ।

(५) पुस्तक स्वीकार करते ही उस पर निश्चित कि
हुए नक्द पुरस्कार का आधा अंश दिया जायग
शेष पुस्तक के छपने पर छपी हुई प्रतियों के सा
भेजा जायगा ।

पत्र-व्यवहार इस पते से करना चाहिए:—

व्यवस्थापक, 'सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-माला,
कार्य्यालय,
कानपूर ।

# निवेदन ।

—:o:—

रशियन ऋषि महात्मा टालस्टाय संसार के उन महान व्यक्तियों में से थे, जो अपनी अलौकिक प्रतिभा से संसार के विचारों में बड़ा उलट फेर कर जाते हैं । हमारे देश के वर्तमान कर्णधार महामना महात्मा गान्धी भी उनके विचारों को बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं । उधर म० टालस्टाय को अपने जीवन-काल में कर्मवीर गांधी जी से अपने सिद्धान्तों को कार्य-रूप में परिणत देखने की आशा थी । प्रसन्नता की बात है कि बाबू शीतला सहाय, सम्पादक "स्वराज्य" इलाहाबाद ( आजकल जेल में ) ने उन्हीं सिद्धान्तों पर लिखे गये कुछ लेखों का अनुवाद करके सस्ती-हिन्दी-पुस्तकमाला को देने की कृपा की है, हम इसके लिये आपके परम कृतज्ञ हैं । यह हमारी ग्रन्थमाला का चौथा पुष्प है । आशा है कि सर्व साधारण इसमें उल्लिखित विचारों के अध्ययन, मनन और अनुसरण से लाभ उठावेंगे ।

विनीत :—

प्रकाशक

[ १ ]

# परिश्रम और आलस्य ।

* बॉंडरिफ़ ने एक पुस्तक लिखी है जिसका शीर्षक है "परिश्रम और आलस्य"। इस पुस्तक के आरम्भ में उन्होंने यहूदी धर्म पुस्तक इन्जील से निम्नलिखित आयत उद्धृत की है:

"चोटी का पसीना एड़ी तक'

यह पुस्तक मुझे अपनी भाषा की सुन्दरता, स्पष्टता और भावों की गम्भीरता के कारण बड़ी महत्व-पूर्ण मालूम होती है। इस पुस्तक की हरएक पंक्ति से मालूम होता है कि लेखक ने पुस्तक में जो कुछ लिखा है उस पर उसका दृढ़ और अविचल विश्वास है।

---

नोट

* टी० एम० बॉंडरिफ़, सन १८२० ई० में, रूसमें एक छोटे किसान के यहां पैदा हुए थे, १८५८ ई० में यह सैनिक बना कर फौज में काम करने के लिए भेजे गए, किन्तु उन्हों ने अपना धर्म तब्दील कर दिया। इस कारण से रूस के क़ानून के मुताबिक़ १८६७ ई० में उन्हें देश निकाले की सज़ा मिली और यह साइबेरिया भेज दिये गए। यहां पर यह बड़े

इस पुस्तक में सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि जि
सिद्धान्त का इसमें विवेचन किया गया है, वह अत्य
आवश्यक और बिलकुल सत्य है।

यह सिद्धान्त यह है, "दुनियां में आकर हमारा स
महत्वपूर्ण कर्तव्य यह नहीं है कि हम सब अच्छी
ज़रूरी चीज़ों को जानलें, बल्कि यह कि अच्छी और ज़
चीज़ों में से कौन सी चीज़ अपने महत्व के कारण प्रथम श्रे
की है, कौनसी दूसरी श्रेणी की, और कौन सी तीस
श्रेणी की।"

अगर यह सिद्धान्त सांसारिक बातों में उपयुक्त कहा
जा सकता है तो उन धार्मिक बातों में तो अर्थात् उन
बातों पर जिनका सम्बन्ध मनुष्य के कर्तव्य से है य
सिद्धान्त विशेष रूप से उपयुक्त होना चाहिये।

---

परिश्रम के साथ रहने लगे और उन्हों ने कुछ धन भी जम
कर लिया। उनका सिद्धान्त था कि हरएक आदमी को अप
खाने के लिये अवश्यमेव परिश्रम करके अन्न पैदा कर
चाहिये। इस सिद्धान्त के प्रचार में उनका सब धन ख
[illegible] ने एक किताब भी इस विषय पर लिखी
[illegible], किन्तु फ्रांस और अन्य दे
[illegible] होतारे।

से मालूम होता है कि लोग इस नियमको केवल अस्वीकार ही नहीं करते, बल्कि इस के बिलकुल विपरीत आचरण करते हैं गरीब, अमीर, राजा, प्रजा सभी इसयत्न की कोशिश करते हैं कि इस नियम का पालन न हो, बल्कि इसका उल्लंघन किया जाय। बौंडरिफ़ ने अपनी पुस्तक में बताया है कि यह नियम अकाट्य, अनादि और स्थायी है और इस के उल्लंघन करने से निश्चय ही अनेक दुःख पैदा होते हैं। बौंडरिफ़ ने इस नियम को समस्त नियमों से श्रेष्ठतम नियम कहा है।

इस पुस्तक के लेखक ने यह दिखाया है कि इस नियम के उल्लंघन करने से कितने पाप होते हैं। मनुष्य के निश्चित कर्तव्यों में से लेखक के कथनानुसार मुख्य, आवश्यक और स्थिर कर्तव्य यही है कि खाने-पीने, ... रहने के आवश्यक ... मे, कड़ी से ... करके पैदा करे। ... है कि यह ... एक आदमी को ... के लिये ... करता ... अपरिहार्य, ... किन्तु ... मानना चाहि ... करता ... लिये अनिवार्य ...

इस ... सम ... इसको उतनी ही ...

हत्या,फांसी, क़ैद, युद्ध इत्यादि या वे भूख के कारण, अ
जीवन की आवश्यकतायें पूरी न हो सकने से, अत्यन्त परि
करने से, अत्यन्त व्यसन-वासना में लिप्त होजाने से, ये
आलस्य में पड़े रहने से या उपरोक्त बातों से उत्पन्न
आदतों से पैदा होते हैं। मनुष्य के लिये इस से बढ़कर
कौनसा अधिक पवित्र कर्तव्य हो सकता है कि वह एक
मनुष्य मात्र के दुःखों का कारण दरिद्रता के मिटाने
प्रयत्न करे और दूसरी ओर उन वासनाओं का नाश करे, जि
से लोग धनी होकर व्यसन और आलस्य में फंस जाते
इन दोनों के नाश करने का इस से बढ़कर और कौन
अच्छा तरीक़ा होसकता है कि मनुष्य यह काम कर
शुरू करदे जिस से कि मानुषिक आवश्यकतायें पूरी हों औ
बेकारी और आलस्य के फंदे से अपने को मुक्त करदे, अर्थात्
एक आदमी परिश्रम करके अपने लिये भोजन और वस्त्र
पदार्थ स्वयं पैदा करे और अपने ही हाथ से पैदा किए हुए
और वस्त्र से अपना पालन पोषण करे, जैसा टॉल्सटॉय क
हता है।

हम लोग आज कल बेतरह फन्दों में फंसे हुए हैं। हमने
अपने आपको अनेक प्रकार के नियमों में बांध लिया है,
धार्मिक, सामाजिक और कुटुम्ब सम्बन्धी सैकड़ों नियम
बना रक्खे हैं, हर एक बात के लिए कोई न कोई आदेश मौजूद

आवश्यकता के लिए काफ़ी अनाज न पैदा कर सकेगा तो कोई दूसरा, जिसने भाग्यवश ज़रूरत से ज़्यादा पैदा करलिया है, उस की कमी को पूरा करदेगा। क्योंकि जब अनाज बिकने की चीज़ रहेगीही नहीं तो ऐसी सहायता करने में किसी को ज़रा भी असमंजस न होगा। उस समय आदमी भूख से आजिज़ आकर धोका देकर या उद्दण्डता करके अपना पेट भरने का उद्योग न करेंगे और जिस समय लोग सन्तुष्ट होंगे, उद्दण्डता और धोखेबाज़ी दुनियांसे उठ जायगी क्योंकि खाने पहिनने की कमी के कारण ही आज कल लोग इस प्रकार के पाप करने पर मजबूर होते हैं।

अगर इसपर भी कोई आदमी उद्दण्डता करेगा या धोखा देगा तो आजकल की तरह मजबूरी से नहीं, बल्कि स्वभाव वश होकर। जो स्वभाव से ह. . .िवल है और जो किसी किसी कारण से मेहनत करके पेट नहीं भर सकते, उन लोगों के लिये भी आवश्यक न होगा कि वे अपने पेट के लिये अपने शरीर को, अपने श्रम को, अपनी आत्मा को बेचने पर विवश हों।

जैसा आजकल होरहा है, लोगों में बिना परिश्रम किये हुए आनन्द से रहने की आकांक्षा फिर न पाई जायगी और अपनी मेहनत दूसरों के सर न मढ़ी जायगी। कितने बहुत ज़्यादा काम करते करते नाश न होगा और सब अपने आपको काम करने की ज़िम्मेदारी से न बचा सकेंगे

आज कल के सज्जन लोग अपनी मानसिक शक्ति को सब से ज़्यादा काहिलों की काहिली को बढ़ाने और उसे आनन्द दायक बनाने में न लगायेंगे बल्कि, परिश्रम करने वालों की मेहनत को कम करने में व्यय करेंगे। कृषि श्रम में अगर सब लोग हिस्सा लेने लगेंगे और इस को अपने जीवन का मुख्य कर्त्तव्य मान लेंगे तो मनुष्य मात्र के समस्त दोष नाश हो जांयगे और वह सीधे रास्ते पर आसानी से चलने लगेंगे।

यदि हम अपनी मौजूदा ज़िन्दगी क़ायम रक्खें (जिस में हम कृषि श्रम को नफ़रत की निगाह से देखते हैं और कृषि श्रम करने से दूर रहते हैं) और इस के दोषों को मिटाने का भी प्रयत्न करें तो यह बिल्कुल वैसे ही निष्फल होगा जैसकि हम उस गाड़ी के बचाने का प्रयत्न करें जिसके पहिये आसमान की तरफ़ करके हम खींच रहे हैं। हमारे प्रयत्न निष्फल होंगे जब तक हम गाड़ी सीधी नहीं करते और पहियों को ज़मीन पर रख कर नहीं चलाते।

मैं लेखक के इन विचारों से बिलकुल सहमत हूं। मैं तो यह कहता हूं कि एक ज़माना था जब एक आदमी दूसरे आदमी को खा जाता था। जब आदमियों में मनुष्यत्व का भाव बढ़ा तो उन्हों ने एक दूसरे को खाना छोड़ दिया। इस के बाद एक ऐसा ज़माना आया जब कि लोगों ने दूसरों की मेहनत की कमाई को ज़बर दस्ती छीनना शुरू करदिया और

यह एक दूसरे को गुलाम बना कर रखने लगे, किन्तु आदमियों में मनुष्यत्व का भाव बढ़ता गया, यहां तक कि ऐसा करना भी असम्भव हो गया। उससमय उद्दण्डता और ज़बरदस्ती हालाँकि लुक छिप कर कायम रही, लेकिन उतने खुले तौर पर नहीं। आदमी एक दूसरे की मेहनत की कमाई को खुल्लम खुल्ला नहीं छीनते थे।

आज कल जो उद्दण्डता और ज़बरदस्ती हम करते हैं वह यह है कि हम अपने भाई की दरिद्रता का बेजा फ़ायदा उठाते हैं और उसको लूट लेने का उद्योग करते हैं। इस लेखक के मतानुसार वह समय जल्द आने वाला है जब कि लोगों में मनुष्यत्व का इतना ज्ञान हो जायगा कि वह अपने एक भाई की दरिद्रता से बेजा फायदा उठाना या उसको ऐसे अवसरों पर लूटने का प्रयत्न करना अपने मनुष्यत्व के विरुद्ध समझेंगे। और, कृषिश्रमको अपनामुख्य कर्तव्य समझ कर आवश्यकता पड़ने पर बिना बेचे हुए भूखे होने पर खाना और नंगे होने पर वस्त्र दिया करेंगे। जिस तरह से सोतेका पानी पहिले किनारे की दूब और वृक्षों की जड़ों को सींचता है इसके बाद वृक्षों के पत्तों को तृप्त करता है, वैसे ही सत्य पर विश्वास करने वाला यह नहीं पूछता कि उसका सबसे पहिला कर्तव्य क्या है? शिक्षा देना, सैनिक बनाना, व्यसन-वासना की चीज़ें पहुंचाना या लोगों को भूख

से मरते हुए बचाता। जैसे किसी सोते का पानी पहले पृथ्वी तृप्त करने के बाद ही पशुओं और मनुष्यों को तृप्त करता है, वैसेही सत्य पर विश्वास करने वाला आदमी भूखों को भोजन देने के बाद और दरिद्र को दरिद्रता से बचाने के बाद ही दूसरे साधनों के द्वारा सेवा करने का ख्याल करेगा। जो आदमी सेवा और सत्य के सिद्धान्त को केवल मानसिक रूप से ही नहीं, बल्कि वस्तुस्वरूप से मानता है उसको यह पूछने की आवश्यकता नहीं होती कि मेरा पहला कर्तव्य क्या है। जो आदमी यह समझता है कि अपने भाई की सेवा करना उसके जीवन का उद्देश्य है, वह कभी इस भयंकर गल्ती में नहीं फंस सकता कि भूखसे व्याकुल और वस्त्रहीन मनुष्य के लिये अन्न और वस्त्र का दान तो दूसरों पर डाल दे और स्वयं सुन्दर सुन्दर ज़ेवर बनाकर या सितार अथवा पियानो बजाकर सेवा करने का विचार करे। सेवा और प्रेम में मूढ़ता नहीं पाई जाती।

जब हम भूखे की सेवा करना चाहते हैं उस समय हम उसको उपन्यास पढ़कर नहीं सुनाते, नंगे और वस्त्रहीन की सेवा के लिये हम उसके कानों में रूपहली बालियां नहीं लटकाते, इसी तरह मनुष्यमात्र की सेवा यह हरगिज़ नहीं कही जा सकती कि हम मनुष्य आत्माओं के लिये मनरंजन के पदार्थ पहुंचावें और भूखे और नंगों को दरिद्रता के कारण मर जाने दें।

प्रेम और सेवा जोकि ज़बानी नहीं है,
है, मृदुता पूर्ण नहीं होती। प्रेम से ही
पैदा होता है।

इसलिए जिस आदमी के हृदय में प्रेम
कभी न करेगा। वह जानता है कि मनु
आवश्यक सेवा क्या है? वह यही काम करेगा
मरने से बचें और वस्त्रहीन और मेहनत
हुए लोगों में जान आजाय, अर्थात् वह
प्रकृति से स्वयं संग्राम करेगा। जो आदमी
दूसरों को धोखा देना चाहता है वही मनुष्य
समय-जबकि वे दरिद्रता से संग्राम कर
न देगा, उनके ऊपर स्वयं ही मार बना रहे
दिल को और उन लोगों को जो उसकी
नाश होते हैं, यह दिलासा दिलाने का
में उनके उद्धार के लिये एक बड़ी भारी
रहा हूं।

जो आदमी मनुष्यसेवा को अपने जी
समझेगा उसके मुंह से ऐसी बात कभी
और अगर उसने ऐसा कहा भी तो उसका
बात का अनुमोदन कदापि न करेगा। उस
जात

इसलिए मैं अपने पाठकों से यह प्रार्थना करूंगा कि थोड़ी देर के लिये वह अपनी युक्ति को काम में न लावें और बहस विवाद न करें, बल्कि अपने अन्तःकरण को साक्षी देकर बतावें कि कितने ही गुणी, दयालु और परोपकारी होने पर भी क्या आप उस समय जबकि आपके दरवाज़े पर एक आदमी अन्न से भूखों मर रहा है, वस्त्र न होने से जाड़े से पीड़ित है बीमारी से ग्रसित है, आप मज़े से दूध, घी, हलवा-पूड़ी उड़ा सकते हैं? और राजनैतिक, सामाजिक, शिक्षा और कला सम्बन्धी बातों पर वाद-विवाद कर सकते हैं? कदापि नहीं किन्तु ग़ौर से देखिये, ऐसे पीड़ित आदमी अनेकों मौजूद हैं अगर आपके दरवाज़े पर नहीं, तो दस गज़ या १० मील के फ़ासिले पर आप को यह सब बातें मालूम हैं, तथापि आप परवाह नहीं करते। आप इन बेचारे ग़रीबों से दूर रहने के लिये क्या क्या नहीं करते। या तो आप स्वयं ही इन से दूर रहते हैं या इन्हीं को पास नहीं आने देते। लेकिन याद रखे ऐसे लोग सब जगह मौजूद रहते हैं।

अब क्या करना चाहिये?

इस सवाल की तह पर जाइए। उन लोगों के साथ काम कीजिये जो भूखों के लिये अन्न और नंगों के लिए कपड़ा पैदा करते हैं। डरने की कोई बात नहीं है। ऐसा करने से कोई बुराई न होगी, बल्कि हर तरह की भलाई है।

तो। सर्व साधारण की पंक्ति में आजाइये, अपने निर्बल,
दरिद्र भाई के साथ भूखों को तृप्त करने और नंगों को
वस्त्र देने के कार्य में—खेती बारी में—प्रकृति से संग्राम
करने में लग जाइये। उस समय आप को यह अनुभव होने
लगेगा। आप का अन्तःकरण साफ़ साफ़ बता देगा कि
आप को शान्ति और स्वतंत्रता मिल गई। आप के हृदय में
सरलता पैदा हो जायगी, आप को अनुभव हो जायगा कि
आप जीवन के सच्चे रास्ते पर चल रहे हैं और उस
समय आपको ऐसा अपूर्व, विमल और अगाध आनन्द प्राप्त
होगा जोकि त्याग दया करने पर किसी अन्य प्रकार प्राप्त
नहीं हो सकता।

आप को पहिली बार अपने सीधे सादे मज़दूर भाइयों
का ज्ञान हो जायगा जिन्हों ने आप को अब तक रोटी
पहुंचाई है। आप को यह देख कर आश्चर्य होगा कि उन में
ऐसे गुण पाये जाते हैं जो आपने और कहीं नहीं देखे।
आप को उन में अगाध प्रेम मिलेगा, वह आपकी इतनी
सेवा करेंगे कि आप अपने को इस भलाई के अयोग्य समझेंगे।
इतने कि अभी तक आप उन से नफ़रत करते आये हैं,
आप से वहां कोई भी घृणा न करेगा, बल्कि वहां आप का
प्रेम और सत्कार से स्वागत होगा, क्योंकि वे देखेंगे कि
आपने अपना कर्तव्य समझा और उनकी सहायता करने के
लिये कदम उठाया।

आप को मालूम होजायगा कि समुद्र की लहरों से बचने के लिये आप जहां बैठे थे, वह द्वीप न था बल्कि वह दलदल था जिस में आप धीरे धीरे धंस रहे थे और इसके विपरीत जिसे आप समुद्र समझ कर डर गये वह समुद्र नहीं था बल्कि दृढ़ भूमि थी जिस पर आप बड़े दृढ़ता और आनन्द से चल सकते हैं। इस प्रकार आप का भ्रम दूर हो जायगा और आप सत्य मार्ग पर आजायंगे इसके साथही आप को मालूम हो जायगा कि आप ईश्वर की आज्ञा की उपेक्षा नहीं कररहे हैं, बल्कि उसका पालन कर रहे हैं।

# लोग नशे का सेवन क्यों करते हैं?

क्या कारण है कि लोग ऐसी ऐसी चीज़ों का सेवन करते हैं जिन से उनकी अक़्ल मारी जाती है, जैसे शराब, भंग, गांजा, चरस, अफ़ीम, तम्बाकू, कोकीन, इत्यादि। लोगों ने इन चीज़ों का इस्तेमाल क्यों शुरू किया? और इनका प्रचार क्यों इतनी जल्दी हो गया? हरएक श्रेणी के आदमियों में, सभ्यों और असभ्यों में, इन का प्रचार क्यों बढ़ता जाता है? क्या कारण है कि जहां कहीं पर शराब, भंग, अफ़ीम इत्यादि का प्रचार नहीं, वहां तम्बाकू, ज़रूर इस्तेमाल की जाती है?

लोग अपने आप को जान बूझ कर क्यों बेहोश और बेमस्त बना लेते हैं?

किसी भी आदमी से पूछिये कि तुम शराब क्यों पीते हो या तुमने शराब का पीना क्यों शुरू किया, तो वह जवाब देगा कि अच्छी चीज़ है, सभी पीते हैं, इस से तबीयत खुश रहती है, इत्यादि। जिन लोगों ने इस प्रश्न पर कभी विचार नहीं किया है कि शराब पीना अच्छा है या बुरा, वह यह जवाब देते हैं कि शराब पीने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है और शरीर में बल आता है।

किसी तम्बाकू पीने वाले से पूछिये कि तुम तम्बाकू क्यों पीते हो और पहिले पहल तम्बाकू पीना कैसे शुरू किया?

तो यह जवाब देगा कि दिल बहलाने के लिये सभी शरा
पीते हैं।

अफीम, गांजा, चरस, इत्यादि के पीने वाले भी
प्रकार के जवाब देते हैं, वे कहते हैं कि हम इसका से
अपनी तबीअत खुश करने के लिये करते हैं या यह यह
हैं कि हम क्या, सभी ऐसा करते हैः-अर्थात्, अगर कोई
काम करें जिस से प्राकृतिक सम्पत्ति का नाश न होता
या कोई ऐसी चीज़ शराब न जाती हो जो बड़ी मिहनत
बनाई गई है, या जिससे अपनी या दूसरे की हानि न
हो तो उस काम पर आक्षेप नहीं किया जा सकता। ले
शराब, गांजा भंग और तम्बाकू का पैदा करना, जि
लाखों आदमियों का समय लगता है और जिसके
अच्छी से अच्छी ज़मीन इस्तेमाल की जाती है, कभी
नहीं कहा जासकता। इतना ही नहीं, इन चीज़ो के इस्ते
करने से बड़ी २ बुराइयां पैदा होती हैं जिसको हर
आदमी मानता है और जो सबको मालूम हैं। इसके
इतने आदमी मरते हैं कि संसार की आज तक की
और समस्त महामारियों से मिलाकर इतने आद
मरे होंगे। अब लोग यह सब जानते हैं, फिर हम यह
मानलें कि लोग नशा पैदा करने वाली चीज़ों को केवल
"दिल के खुश करने के लिए" या 'तबीअत बहलाने के
या "वक्त काटने के लिए" इस्तेमाल करते हैं।

इस का कुछ और कारण होगा। हर एक ने ऐसे आदमी
हर देखे होंगे जो अपने बच्चोंकी बहुत मुहब्बत करते हैं और
। के वास्ते हर एक प्रकार के कष्ट सहने को तय्यार रहते हैं,
फिन वे शराब भंग, अफ़ीम और तम्बाकू में इतना
रुपया सर्फ कर देते हैं कि उतना रुपया अगर वह अपने बच्चों
लिये सर्फ़ करते तो उनके बच्चे भूख के कष्ट से और अन्य
कलीफों से बच जाते। जिस समय किसी आदमी के सामने
ह सवाल पेश है कि भूखे और नंगे बच्चों के लिए खाना
पड़ा पहुचाऊं, या अपने लिए मादक वस्तु खरीदूं, उस
त अगर वह बच्चों का ख़याल न करके मादक द्रव्यों के सेवन
अपना रुपया सर्फ़ करता है तो यह साफ ज़ाहिर है कि वह
सा काम केवल इस लिए नहीं करता कि "और लोग भी
राब पीते हैं" बलिक इस का कोई और प्रबल कारण होना
ाहिए। स्पष्ट है कि ऐसा काम "तबीअत बहलाने के
लए" 'दिल खुश करने के लिए' और वक्त काटने के लिए'
ो नहीं होसकता। इसका कोई प्रबलतर कारण अवश्य
ेगा।

इस विषय पर पढ़ने के बाद, और शराब पीने वालों को
खने के बाद, विशेष कर अपने उस समय के जीवन पर
िचार करने के बाद, जब मैं शराब पीता था, मैं निम्न
लिखित नतीजे पर पहुंचा हूं।

अगर आदमी अपने जीवन पर नज़र डाले तो उसको उसमें दो प्रेरणायें दिखाई देंगी। एक तो शारीरिक ज्ञान-शून्य होती है, दूसरी ज्ञान-पूर्ण और आत्मिक होती। शारीरिक और ज्ञान शून्य प्रेरणा के अधीन मनुष्य पशुओं के समान खाना-पीना, सोता, चलता फिरता और विषय वासनाओं में लीन रहता है। ज्ञानपूर्ण और आत्मिक प्रेरणा भी शरीर में ही होती है खुद तो कुछ नहीं करती, लेकिन शारीरिक प्रेरणा के वश जो कुछ होता है उस पर टीकाटिप्पणी किया करती है। अगर यह शक्ति किसी काम को पसन्द करती है तो यह उस को सराहती है, अगर बुरा समझती तो उस की निन्दा करती है।

यह आत्मिक प्रेरणा या शक्ति, जिसे अन्तःकरण कहते हैं मनुष्य को कुतुबनुमा की सुई के समान सत् और असत् मार्ग का ज्ञान करा देती है। जबतक हम सत् मार्ग पर चलते रहते हैं, हमें यह पता नहीं चलता कि हमारी आत्मा में अन्तःकरण कोई है भी। लेकिन ज्यों ही हमने कोई बुरा काम किया, त्योंही अन्तःकरण में वेदना पैदा होजाती है और कुतुबनुमा की सुई के समान फौरन बताने लगती है कि हम सीधे रास्ते से विचलित होगये हैं। जिस तरह हर एक जहाज का कप्तान यह जानते हुए कि मेरा जहाज गलत रास्ते पर जा रहा है, उस समय तक अपना जहाज आगे नहीं बढ़ा

सकता जबतक वह ठीक रास्ते पर अपने जहाज़ को न ले आवे या जबतक वह यह बिलकुल भुला न दे कि उसका जहाज़ ग़लत रास्ते पर जा रहा है, इसी तरह से जिस समय किसी आदमी को यह मालूम होजाता है कि वह ग़लत रास्ते पर जारहा है उस समय वह या तो सन्मार्ग पर चला आता है या अपने सामने से किसी न किसी तरह यह ख़याल हटा देता है कि वह ग़लत रास्ते पर जारहा है।

प्रत्येक मनुष्य के जीवन में निम्न लिखित एक न एक काम हमेशा जारी रहता है (१) अपने आचरण को अपने अन्तःकरण के अनुसार बनाना (२) अपने अन्तःकरण की आवाज़ को दबा देना, जिससे वह उसी असत्-मार्ग पर बेखटके चल सके।

कुछ लोग पहला काम करते हैं, कुछ दूसरा। पहले के लिये केवल एक रास्ता है:—आत्मिक उन्नति अर्थात् अपने अन्तःकरण को शुद्ध करना और अपने अन्तःकरण की आज्ञा के अनुसार चलना। दूसरे के लिये अर्थात् अन्तःकरण की आवाज़ को एकदम दबा देने के लिए दो साधन हैं। एक तो बाहरी अर्थात् वह जिसका प्रभाव बाहर से डाला जाता है और दूसरा वह, जिसका प्रभाव हमारे शरीर के अन्दर से ही पड़ता है, जिसे आन्तरिक कहते हैं। बाहरी तरीका यह है कि अपने आप को ऐसे कामों में लगा लेना

जिससे अन्त:करण की आवाज़ ही न सुनाई दे, पहला मा
है। आन्तरिक साधन यह है कि अन्त:करण को ही अन्ध
मय कर दिया जाय।

जैसे जब कोई किसी चीज़ को नहीं देखना चाहता
वह या तो उस चीज़ की ओर से अपना ध्यान हटाकर दू
चीज़ की ओर लगा देता है या अपनी आंख और उस व
के दरमियान एक परदा डाल देता है। इसी तरह मे
अन्त:करण की आवाज़ से कोई अपना पीछा छुड़ाना चा
है तो वह या तो अपना ध्यान दुनियां की ओर अनेक व
में लगा देता है जैसे खेल तमाशा इत्यादि, या आवाज़
ध्यान देना ही छोड़ देता है। जिन लोगों का धा
और नैतिक जीवन निर्बल होता है उनके लिए खेल त
विषय वासना आदि में एक दफ़ा ध्यान लगा देने के बाद
बात बिल्कुल नामुमकिन होजाती है कि वह अन्त:करण
आवाज़ को सुन सके, किन्तु जिनकी धार्मिक और नैत
प्रकृति प्रबल है उनके लिए केवल दुनियां की दूसरी च
में ध्यान लगा देना ही काफी नहीं होता।

बाह्य साधन अकसर इतने प्रबल नहीं होते कि
आदमी के हृदय से यह बात निकाल दें कि उसके आच
और अन्त:करण की आज्ञा में कितना अन्तर है
अन्त:करण की वेदना बहुत दु:खजनक होती है,

इये वेदना शून्य जीवन व्यतीत करने के लिए लोग उस
ान्तरिक निश्चित साधन का प्रयोग करते है, अर्थात मादक
व्यों का, जिससे मनुष्य की बुद्धि और अन्तःकरण सब अन्ध-
ारमय होजाते हैं।

जब कोई आदमी अपने अन्तःकरण की आज्ञा के अनुसार
ाचरण नहीं करता, लेकिन साथ ही साथ उसमें इतनी
ैतिक शक्ति भी नहीं होती कि वह अपने चरित्र को अपने
अन्तःकरण के अनुसार बनासके, और जो खेल तमाशा
त्यादि देखने का बागसाधन वह अपने अन्तःकरण की
आवाजको दबाने के लिये काममें लाताहै वह इतना प्रबल नहीं
होता कि उसकी वेदना का नाश करदे, लेकिन वह भी चा-
हता है कि बेफिकरी और बेपरवाही की ज़िन्दगी गुज़ारे, उस
समय मनुष्य मादक द्रव्यों का सेवन करके अन्तःकरण की
आवाज़ को दबा देताहै। जैसे कोई आदमी जब किसी चीज़
को देखना नहीं चाहता तो उसकी ओर से अपनी आंखें मूंद
लेता है।

संसार में अफ़ीम, शराब और तम्बाकू के सर्वव्यापी प्रचार
का कारण यह नहीं है कि इनमें स्वाद होता है या इन
से मनोभिन्न खुश होती है या यह कि दिल बहलता है। मुख्य
कारण इसका यही होता है कि आदमी इन चीज़ों का

सेवन अपने अंतःकरण की आवाज़ को दबा देते हैं
करना है।

मैं एक रोज़ एक सड़क से गुज़र रहा था।
आपस में बातें करते चले जाते थे। उनमें
रहा था.-" जब आदमी नशे में नहीं होता है उस
ना ऐसा करते हुए बहुत शरम मालूम होती है"।

जिस समय आदमी नशे में होता है उस समय उस
कामों के करने में लज्जा नहीं आती जो कि गैर
हालत में उसे लज्जा जनक मालूम होते हैं। वास्त
मुख्य कारण मादक द्रव्यों के सेवन करने का यही
मादक द्रव्यों का सेवन या तो किसी निन्दनीय
के बाद उस से पैदा होने वाली लज्जा से मुक्त होने
करते हैं या इन वस्तुओं को सेवन करके पहिले से
ने आपको ऐसी स्थिति में लेआते हैं कि अपनी पाश
त्ति के अनुसार काम करने के बाद उनके अन्तःकरण
ता पैदा हो न हो।

(Sober) ग़ैरनशे की हालत में आदमी को वेश्य
जाने में, चोरी करने में, क़त्ल करने में, शरम म
है। शराब के नशे में मस्त आदमी को इन बातें
ने में ज़रा भी शरम नहीं आती। इस लिए जिस
ई आदमी कोई ऐसा काम करना चाहता है जिसे उ

किया जाय, चोरी और क़त्ल न हो, सिर्फ दो चार बुरे
काम हो जांय—तो मादक द्रव्यों का सेवन इन कामों का
कारण हरगिज़ न समझना चाहिये, बल्कि यह कहना चाहिये
कि यह आपही आप हो जाते हैं। लोग यह समझते हैं कि
अगर मादक वस्तुओं के सेवन के बाद कोई आदमी ज़ाब्ता
फ़ौजदारी के खिलाफ़ कोई जुर्म नहीं करता तो या
समझना चाहिए कि उसका अन्तःकरण नहीं करहा
और इस तरह से रहने वाले शराब पीने के आदी आदमि
की ज़िन्दगी अच्छी समझी जानी चाहिए। दो च
काम जो उनसे बुरे हो जाते हैं, उनका कारण मादक द्र
का सेवन नहीं है चाहे वह नशा पियें, या न पियें, ऐसे का
उन से स्वभावतः हो जाते हैं।

हर एक आदमी अपने तजरबे से जानता है कि शर
या तम्बाकू पीने से मनुष्य के चित्त की अवस्था तबदी
हो जाती है, और आदमी उन कामों के करने में ज़रा
लज्जित नहीं होता जो अन्यथा वह कभी न करत
अन्तःकरण की साधारण सी साधारण वेदना के ब
आदमी किसी न किसी मादक द्रव्य के प्रयोग की इ
करने लगता है। मदान्ध अवस्था में आदमी अपने जी
और उसकी स्थिति को बिलकुल भूल जाता है। मा
द्रव्यों का कम मात्रा में किन्तु प्रत्येक दिन सेवन क

के सेवन की आवश्यकता उन लोगों को भी होती है
ऐसे व्यापार में लगे हैं जिसे उनका अन्तःकरण
कहता है, चाहे उस व्यापार को दूसरे लोग अच्छा
क्यों न कहते हों।

इस लिए यह स्पष्ट है कि मादक द्रव्यों का
चाहे वह कम मात्रा में हो, या अधिक मात्रा में, स्थायी
से हो या अस्थाई, समाज के उच्च श्रेणी में हो या नि
श्रेणी में, वह केवल एक ही कारण से होता है और
यह कि मनुष्य की अन्तरात्मा द्वारा आकांक्षित
और वर्तमान जीवन के अन्तर को भुलाया जाय।

मादक द्रव्यों के इस सर्वव्यापी प्रचार का और वि
कर तम्बाकू के प्रचार का, जिसका बहुत ज्यादा सेवन
जाता है और जो बहुत ज्यादा हानिकारक है, यही
कारण है।

लोग समझते हैं कि तम्बाकू पीने से तबीअत खुश
जाती है, बुद्धि तेज़ी से काम करने लगजाती है और
सेवन से अन्तःकरण पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़
लेकिन अगर आप इस बात को देखने की कोशिश करें
कि किस विशेष परिस्थिति में तम्बाकू पीने की
पैदा होती है तो आप को मालूम हो जायगा कि त
पीने से अन्तःकरण वैसा ही मलिन हो जाता है जैसे

कोई भी तम्बाकू पीने वाला अगर चाहे तो ...
कर सकता है कि उस को तम्बाकू पीने की ...
परिस्थितियों में ही-विशेष कर कठिनाई के समय ही-उ...
हुआ करती है। मुझे अपने वह दिन याद हैं जब मैं तम...
पिया करता था। मैं उसी समय तम्बाकू पीने की प्र...
इच्छा अनुभव करता था जब ऐसी बातें मुझे याद ...
लगती थीं जिनको मैं याद करना नहीं चाहता था, ब...
भूल जाना चाहता था। मैं बेकार बैठा अपना समय ...
किया करता था और दिल में समझता था कि ...
समय नष्ट न करना चाहिये लेकिन काम करने की त...
भी नहीं चाहती थी इसलिये मैं तम्बाकू पीने लगत...
और बेकार बैठा रहजाता था। मैं जब किसी से पांच...
शाम को मिलने का वादा करता था और समय प...
पहुंच सकता था, उस समय मुझे ख़याल आता थ...
मैं अपना वादा पूरा नहीं कर पाता। लेकिन मैं इस...
को भुला देना चाहता था इसलिये मैं तम्बाकू पीने लगत...
मैं किसी से नाराज़ हो जाता था और उसे कड़ी...
कहना शुरू करदेता था, लेकिन मैं अपने दिल में ...
सोचता था कि मैं ग़लती कर रहा हूं, मुझे चुप हो...
चाहिये, लेकिन मैं अपना क्रोध दिखाना चाहता थ...
लिये मैं तम्बाकू पीने लगता था और क्रोध दिखाता

चीज़ों की ज़रूरत पड़ती है जो आसानी से हम
साथ नहीं रखी जा सकतीं। तम्बाकू में यह दिक़्
होती। हर एक आदमी काग़ज़ और तम्बाकू अ
रख सकता है। शराबी या अफ़ीमची को देख का
पैदा होती है लेकिन तम्बाकू पीने वाला इतना घृ
मालूम होता। तम्बाकू के नशे में एक सुभीता यह
कि और नशों का असर सभी ज्ञानेन्द्रियों पर पड़त
देर तक रहता है, लेकिन तम्बाकू के नशे का प्रभा
अपनी इच्छानुसार, जिस समय और जितनी देर
चाहें, डाल सकते हैं। जब आप कोई ऐसा काम क
जो न करना चाहिये तो आप सिगरेट पी लीजि
उस काम को आसानी से कर सकेंगे। इसके बाद
आप फिर चंगे हो जायंगे और भली चंगी यातें क
और पूर्ववत विचार भी कर सकेंगे। थोड़ी देर
आपको अगर यह मालूम हो कि आपने ऐसा का
है, जो आप को न करना चाहिये तो आप फिर एक
पी लीजिये, खराब काम कर चुकने का ध्यान जात
दूसरी चीज़ों में आप ध्यान लगा सकेंगे और उस
को भूल जायंगे।

आदमी किये हुए काम के विरुद्ध अपने अन्त
आवाज़ को दबाने के लिये ही तम्बाकू का से
करता, बल्कि जिस समय वह कोई पाप करने क

ता है उस समय अन्तःकरण को मुर्दा करदेने के लिये इसका सेवन किया जाता है जिससे वह उस पाप के विरुद्ध वाज न उठा सके। मनुष्य के चरित्र से और तम्बाकू ने की इच्छा से बड़ा सम्बन्ध होता है।

लड़के कब सिगरेट पीना शुरू करते हैं? अकसर उन मय जब कि उन की बाल्यकाल की सरलता जाती हती है। क्या कारण है कि जब तम्बाकू पीनेवाले चरित्र लोगों के समाज में आजाते हैं, उनका तम्बाकू ना छूट जाता है और ज्योंही वह चरित्र हीन लोगों के साथ पड़जाते हैं तो तम्बाकू पीना फिर आरम्भ करदेते हैं। करीब २ सभी जुआ खेलनेवाले तम्बाकू क्यों पीते हैं? और क्या कारण है कि वह स्त्रियां जो नियमित और शुद्ध-जीवन व्यतीत करती हैं, तम्बाकू नहीं पीतीं? क्या कारण है कि सभी रंडियां और पागल आदमी तम्बाकू पीते हैं? आप कहेंगे, आदत पड़जाती है। किन्तु असल बात यह है कि अन्तःकरण को चुप कर देने की इच्छा और मनमाना काम करनेकी ख़ाहिशके साथ २ तम्बाकू पीनेकी आदत पड़ती है।

हर एक तम्बाकू पीने वाले को देख कर हम यह जान सकते हैं कि तम्बाकू के सेवन से अन्तःकरण किस हद तक दब जाता है

* * * * *

लोग अकसर कहते हैं और मैं भी कहा करता था
तम्याकू पीने से दमागी काम आसानी से हो सकता है।
यात ठीक मानी जासकती है अगर सिर्फ काम के
का ही खयाल रखा जाय । तम्याकू पीने वाला अ
तम्याकू पीने के कारण अपने विचारों को तौल नहीं स
यह समझने लगता है कि उसके दमाग़ में एक ए
सैकड़ों ख़यालात पैदा हो गये हैं । लेकिन इसका
यह नहीं होता कि उस के दमाग़ में ख़यालात ज़्यादा
हो जाते हैं । असली कारण यह होता है कि उसको
विचारों पर वश नहीं रहजाता ।

जब कोई आदमी कोई काम करने लगता है उस
उसकी आत्मा में दो शक्तियाँ काम करने लगती हैं, एक
द्वारा तो यह काम करता है और दूसरी शक्ति द्वारा वह
काम पर टीका टिप्पणी करता है । जिस समय
टिप्पणी करनेवाली शक्ति प्रबल होती है, काम धीरे
होता है। लेकिन होता है उच्च श्रेणी का। इसी तरह
जब टीका टिप्पणी करने वाली शक्ति किसी मादक द्र
प्रभाव में होती है उस समय काम तो ज़्यादा होता
लेकिन घटिया होता है।

लोग कहते हैं, और मैं भी कहा करता था, कि
मैं तम्याकू नहीं पीता तो मैं कुछ लिखही नहीं सक

आप लिखना शुरू करदेंगे और खूब, और तेज़ी से लिखेंगे ।

लोग कहते हैं कि ज़रा सी तम्बाकू या शराब से क्या बुरा असर पड़ सकता है । हां; अगर कोई खूब पिये, बेहोश होकर गिर पड़े तो इस के बुरे परिणाम हो सकते हैं । किन्तु ज़रा सी पी लेने में क्या असर हो सकता है ? लोग समझते हैं कि बुद्धि का ज़रा सा शिथिल हो जाना या साधारण सा नशा होजाना कुछ बड़ी बात नहीं । लेकिन यह कहना ऐसाही है जैसे कोई कहे कि घड़ी को पत्थर पर पटक देना तो बुरा है लेकिन उसके पुर्ज़े का ढीला हो जाना या गर्द का चला जाना बुरा नहीं ।

याद रखिये कि मनुष्य के नैतिक जीवन के लिये बुद्धि का गुण बड़े महत्व का है । आदमी की बुद्धि का गुण जिस तरह का होता है, काम भी उसके उसी तरह के होते हैं । ज़रा ज़रा सी बातों से बुद्धि का गुण बदलता रहता है । इन्हीं छोटी छोटी तबदीलियों पर मनुष्य का आचरण और उसके काम निर्भर होते हैं ।

मनुष्य के हृदय की छोटी छोटी तबदीलियों का प्रभाव बहुत प्रबल और विस्तृत होता है । मैं जो कुछ इस समय कह रहा हूँ, उसका कोई सम्बन्ध आत्मा की स्वतंत्रता

। मनुष्य को अपना और दूसरों का सुधार आत्मा द्वा
करना चाहिये। जिस तरह घड़ी के ठीक ठीक चलने
पुर्ज़ों की सफाई जरूरी होती है, वैसे ही आत्मा
साफ और निर्मल रखना आवश्यक है क्यों कि आ
मनुष्य के समस्त जीवन की कुंजी है। इसमें सन्दे
हो सकता, हर एक आदमी यह जानता है। लोग
की परवाह नहीं करते कि उनका अन्तःकरण निर्मल
अपना काम करता है या नहीं। वे सिर्फ इस बात
याद करते हैं कि उनको यह प्रतीत होता रहे
अन्तःकरण और उनके जीवन में कोई भेद नहीं, इ
वह उन चीज़ों का सेवन करते हैं जिससे अन्तःकरण
काम ठीक तौर से नहीं कर पाता और इस लिए उन
अन्तःकरण को आत्मा में और अपने जीवन में कोई
दिखाई देता।

लोग शराब और तम्बाकू [illegible] नहीं पीते,
के कारण नहीं पीते, अपनी [illegible] को खुश करने
नहीं, स्वाद के लिए नहीं, बल्कि अन्तःकरण की आ
दबाने के लिये पीते हैं। और यदि यह बात सत्य है
के कितने भयंकर परिणाम होंगे और कोई प्रकार
में [illegible] [illegible] न करें [illegible] का प्रयोग
और [illegible] [illegible] किस प्रकार का [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

प्रकार के दूसरे आदमियों के बारे में अपने अनुभव को ध्या
में लावे तो उसे मालूम हो जायगा कि उन आदमियों के
मियान जो मादक द्रव्यों का प्रयोग करते हैं और जो
करते, एकप्रकार का निश्चित और स्पष्ट अन्तर पाया जा
जो आदमी जितना ही मादक द्रव्यों का प्रयोग करता
नैतिक दृष्टि से वह उतनाही अवनतिशील होता

लोग कहते हैं कि अफीम (Hashish) आदि के
व्यक्तियों पर भयंकर होते हैं । अलकोहाल के सेव
प्रभाव भी शराबी के लिये भयंकर कहे जाते हैं किन्तु
शराब, बीयर, और तम्बाकू के साधारण सेवन के
इनके मुकाबिले में कहीं ज़्यादा भयंकर होते हैं । अधि
आदमी विशेषकर शिक्षित समुदाय इनका सेवन वि
रूप से करते हैं, और वे ही कुफल भोगते हैं।

परिणामों का भयंकर होना अनिवार्य है क्यों कि
बात माननी पड़ती है कि समस्त सामाजिक,
नैतिक, वैज्ञानिक, साहित्यिक, और कला सम्बन्धी
सब के सब (abnormal)– असाधारणावस्था में
अर्थात् उन आदमियों के द्वारा होते हैं जिन की बुद्धि
के कारण मलिन हो जाती है। लोग समझते हैं जो
यहां की उच्च श्रेणी के आदमियों के समान राजा

द शराब जरूर पीता है, दूसरे रोज़ काम करने के समय
, बिलकुल ही निर्मद अवस्था में होता है, लेकिन
बात ग़लत है। वह आदमी जिसने कल एक
तल शराब पी ली है या एक गिलास स्पिरिट का सेवन
र लिया है, आज उसकी ताक़त गिरी हुई और सुस्त रहेगी
किसी क़िस्म के जोश के बाद अवश्य आ जाया करती
और जब वह इस अवस्था में तम्बाकू पी लेता है, उस
मय उसका दिमाग़ और भी ख़राब हो जाता है। जो
दमी शराब और तम्बाकू कम मात्रा में, लेकिन बराबर
या करता है, उस आदमी के दिमाग़ को सही अवस्था
लाने के लिये यह आवश्यक है कि वह कम से कम
क हफ़्ते तक इन चीज़ों का सेवन एकदम त्याग दे, परन्तु
ह बात बहुत कम हुआ करती है।

सवाल उठता है कि बहुत से आदमी, जो न तो शराब
ते हैं और न तम्बाकू पीते हैं, उन आदमियों की अपेक्षा
ो शराब पीते हैं और तम्बाकू पीते हैं, अक्सर चरित्र में
यों गिरे हुए होते हैं ? और क्या कारण है कि अनेक
ादमी जो शराब या तम्बाकू पीते हैं, अक्सर बड़े-बड़े
ानसिक और नैतिक गुणों से सम्पन्न होते हैं !

इसका जवाब यह है कि जो लोग इस समय शराब
और तम्बाकू पीते हुए नैतिक और मानसिक गुणों को

दिखा रहे हैं, वे यदि इन द्रव्यों का सेवन न करते तो न जाने कितने उन्नतर होते। नैतिक गुणों से सम्पन्न शराब और तम्बाकू का सेवन करते हुए भी बड़े काम कर जाते हैं। इस से यह नतीजा निकलता है कि मादक द्रव्यों के सेवन से अपने आप को मदान्ध न करते तो वह न जाने कितने बड़े बड़े काम करलेते। सम्भव है, जैसे मेरे एक मित्र कहते थे, कि अगर तम्बाकू इतनी ज्यादा न पीते होते तो उनकी लेखनी इतनी भद्दी न होती। दूसरी बात यह भी है कि जिस आदमी की नैतिक और मानसिक उन्नति की श्रेणी जितनी ही ऊंची है उस को अपने जीवन और अपने अंतःकरण में उतना कम भेद मालूम हुआ करता है। और उतना ही कम उस को अपने को मदान्ध करने की आवश्यकता भी मालूम होती है। इसी कारण से बहुत ही शीघ्र प्रभावित होने वाले आदमी, जो बहुत जल्द अपने जीवन और अपने अन्तःकरण की आज्ञाओं में भेद देख लेते हैं,-मादक द्रव्यों का सेवन करके नाश हो जाते हैं।

इस लिए आज संसार में जो काम हो रहे हैं उनमें अधिकांश नशेकी हालत में किये जाते हैं। चाहे उन्हें आम शिक्षक करें चाहे शासित और शिक्षित। यह मज़ाक और न अत्युक्ति ही है। यूरोप के लोगों का देखो सब

। राज् दस-बारह वर्ष से इस बात की तरकीबें मालूम
ने में लगे हुए हैं कि आदमियों के मारने का सब से अच्छा
का क्या है। और हर एक आदमी को ज्योंही यह जवान
1. यह सिखाते हैं कि हत्या क्यों कर करनी चाहिये ? हर
आदमी जानता है कि किसी जंगली क़ौम का आक्रमण
। होने वाला है लेकिन यह सभ्य क़ौमें एक दूसरे के
लाफ़ लड़नेका इन्तिज़ाम करती रहती हैं। सबजानते हैं कि
से अपव्यय बढ़ता है, दुःख बढ़ता है तकलीफें पैदा होजाती
और यह नाशजनक, पापपूर्ण, बुद्धिशून्य, सभी एक दूसरे
हत्या की तैयारी करते रहते हैं। राजनैतिक सम्बन्ध
एम किये जाते हैं जिन में यह निश्चय होता है कि कौन
न मिलकर किस किसको मारडालें। कुछ अपनी आत्मा
ने अन्तःकरण और अपनी बुद्धि के विरुद्ध हत्या करने
इन साधनों में सहायता देने लगते हैं। मदान्ध मनुष्य के
सवा और कोई भी आदमी जिसका दिमाग़ दुरुस्त है अपने
मन में और अन्तःकरण में इतनाभेद रखते हुये ज़िन्दा नहीं
सकता।

लोग जिस क़दर आजकल अपने अन्तःकरण के विरुद्ध
चरण व्यतीत करते हैं शायद ही और कभी न व्यतीत करते
होंगे।

मनुष्य समाज आजकल एक प्रकार से अवनतिशील
। रही है। ऐसा मालूम होता है कि जैसे कुछ सदियों

# पहली सीढ़ी

(१)

समय कोई आदमी किसी काम को दिखाने के
बल्कि किसी उद्देश्य के सिद्ध करने के लिये करता
मय उसे वह काम एक विशेष क्रम के अनुसार
ता है। अगर कोई आदमी किसी ऐसे कामको जिसे
सिद्धि के लिये स्वभावतः पहिले करना आवश्यक
हो करे, या किसी आवश्यक काम को बिल्कुल न
न यह अवश्य कहेंगे कि यह आदमी अपने उद्देश्यको
ं करना चाहता बल्कि वह सब काम केवल दिखाने
ही कर रहा है। यह नियम भौतिक और अभौतिक
तों पर सर्वत्र एकसा युक्त होता है। जिस तरह
हले आटा गूंधे हुए फिर चूल्हा साफ़ करके आग
र रोटी का बन सकना असम्भव है इसी तरह बिना
ति क्रम के साथ आवश्यक सद्गुणों को हासिल
र किसी आदमी का धार्मिक और उपकारी जीवन
करना भी असम्भव है।

नियम का सदाचार पर उपयोग करना विशेष महत्व
है। भौतिक बातों में कर्म के परिणाम को देखकर

कारणों ने इसकी उन्नति को दबा डाला है। अगर एक मात्र यह कारण नहीं तो सब से महत्वपूर्ण कारण यह कि मनुष्य समाज के अधिकांश आदमी अपनेको तम्बाकू मदिरा के प्रयोग से मदान्ध और निर्बल कर चुके हैं।

यदि मनुष्य समाज इस भयंकर पाप से मुक्त हो तो बड़ा कल्याण हो। यह समय नज़दीक आरहा है जब इन द्रव्योंके दोषों को स्वीकार कर लेंगे। हम लोगों द्रव्यों के सेवन के सम्बन्ध में अपने विचार तबदील हैं। लोग इन के भयंकर परिणामों को समझने लगे और उन दोषों की बुराइयां दिखा रहे हैं, जिनसे विचारों में परिवर्तन ज़रूर होगा। इसका परिणाम होगा कि लोग अपने जीवन को अपने अन्तःकरण के अनुसार बनाना शुरू कर देंगे।

यह कार्य आरम्भ हो गया है। लेकिन जैसा कि होना है, उच्चश्रेणी के लोगों में इसका प्रचार उसीसमय जबकि निम्नश्रेणी के लोगों में इसका काफी प्रचार होचुके

# पहली सीढ़ी

—०—

## ( १ )

जिस समय कोई आदमी किसी काम को दिखाने के नहीं बल्कि किसी उद्देश्य के सिद्ध करने के लिये करता स समय उसे वह काम एक विशेष क्रम के अनुसार ा पड़ता है। अगर कोई आदमी किसी ऐसे कामको जिसे की सिद्धि के लिये स्वभावतः पहिले करना आवश्यक ाद को करे, या किसी आवश्यक काम को बिलकुल न तो हम यह अवश्य कहेंगे कि वह आदमी अपनेउद्देश्यको र नहीं करना चाहता बल्कि यह सब काम केवल दिखाने लिये ही कर रहा है। यह नियम भौतिक और अभौतिक ों बातों पर सर्वत्र एकसा युक्त होता है। जिस तरह ा पहिले आटा गूंधे हुए, फिर चूल्हा साफ़ करके आग ाए हुए रोटी का बना सकना असम्भव है इसी तरह बिना विशेष क्रम के साथ आवश्यक सद्गुणों को हासिल र हुए किसी आदमी का धार्मिक और उपकारी जीवन तीत करना भी असम्भव है।

इस नियम का सदाचार पर उपयोग करना विशेष महत्व ता है। भौतिक बातों में कर्म के परिमान को देखकर हम

यह कह सकते हैं कि कर्ता वास्तव में काम करना चाहता है या केवल बहाना ही कर रहा है, किन्तु धार्मिक जीवन इस प्रकार की तसदीक़ नहीं की जा सकती। अगर बिना आटा गूंधे हुए या चूल्हे में आग जलाए हुए, का दावा करे कि मैं रोटी बना रहा हूं (जाता है) तो परिणामों को देख कर अर्थात् रोटी के से ही यह सिद्ध हो जाता है कि यह केवल दिखाने झूठ मूठ रोटियां बना रहा है, किन्तु जब कोई इस बात दावा करता है कि मैं धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहा है हमारे पास प्रत्यक्ष में कोई ऐसा स्पष्ट निशान नहीं जिसे देख कर हम यह कह सकें कि उक्त मनुष्य वास्तव धार्मिक और सात्विक जीवन व्यतीत करने का उद्योग रहा है या केवल बहानाही करता है। (क्यों कि धार्मिक और सात्विक जीवन के प्रभाव आस पास के आदमियों की नज़र में सदा स्पष्ट नहीं होते और अकसर ऐसा होता है कि धार्मिक जीवन के प्रभाव उन्हें हानिकर मालूम होते हैं) अगर लोग किसी आदमी की इज़्ज़त करते हों या उस को लाभदायक बताते हों तो इससे यह सिद्ध नहीं होता यह मनुष्य धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहा है।

इसलिए वास्तविक और अवास्तविक धार्मिक जी को पहिचानने के लिए एक निशान है, और यह निशान

है कि धर्मपरायण और भला आदमी अपने जीवन में सद्गुणों को बाक़ायदा और क्रमानुसार उन्नत करता है। यह निशान बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे केवल यही पता नहीं चल जाता कि अमुक आदमी धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहा है या नहीं बल्कि इससे हम भी यह जान सकते हैं कि हम स्वयं धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं या नहीं, क्यों कि आदमी अपने धार्मिक जीवनके सम्बन्ध में अकसर धोखा खा जाताहै।

धर्म और सदाचार के रास्ते पर चलने की परम आवश्यक शर्त यह है कि हम अपने जीवन में सद्गुणों को बाक़ायदा और क्रमानुसार धारण करें। संसार की महान आत्माओं ने धार्मिक जीवन के हासिल करने के लिये किसी न किसी क्रम के अनुसार सद्गुणों का प्राप्त करना आवश्यक बताया है।

प्रत्येक धर्म में आत्मोन्नति के लिये क्रमानुसार उन्नति आवश्यक मानी गई है। चीनी लोगोंका विश्वास है कि स्वर्ग की सीढ़ी का एक पाया ज़मीन पर है और दूसरा स्वर्ग में। अगर कोई स्वर्ग प्राप्त करना चाहे तो उसके लिए पहिले सबसे नीचे वाले डंडे पर क़दम रखना आवश्यक है। हिन्दू, बौद्ध, और कनफ़्यूशस धर्म ने ही नहीं बल्कि यूनान के महान पुरुषों ने भी सद्गुणों में उत्तमता और मध्यमता मानी है और यह सिद्ध किया है कि जब तक मनुष्य प्रथम श्रेणी

के सद्गुणों का पात्र नहीं तब तक उसके लिए अन्तिम श्रेणी सद्गुणों का धारण करना असम्भव है। संसार की आत्माओंने यह माना है कि शुद्ध सदाचारी जीवन प्राप्त के लिए बाक़ायदा और क्रमानुसार सद्गुणों में धारण करना आवश्यक है।

किन्तु आश्चर्यकी बात है कि आजकल सद्गुणों के क्रमानुसार प्राप्त करने और सात्विक कर्म करने की को लोग बिलकुल भूलगए हैं के अलावा इस बात को कोई आदमी नहीं मानता। लोग तो यहां तक मानते हैं कि साधारण सद्गुणों अभाव होने पर और अनेक दुर्गुणों के मौजूद होते हुए मनुष्य उत्तम सद्गुणों का पात्र हो सकता है। इसी कारण धार्मिक जीवन के सम्बन्ध में अधिकाश सांसारिक लोगों में भिन्न भिन्न विचार पाए जाते हैं और लोग यह भूल गए हैं कि धार्मिक जीवन क्या है।

( २ )

आज कल लोग आत्मत्याग की शिक्षा पाए बिना ही मनुष्य सेवा और ईश्वरभक्ति का उपदेश देने लगते हैं और यह कहते हैं कि मनुष्य बगैर इन्द्रियनिग्रह और आत्मसंयम करे पास करे संसार की तथा मनुष्यमात्र की सेवा कर सकता है।

न्ं कि इस उपदेश के सहारे मनुष्य अपनी पाशविक सियों को क़ायम रखते हुए धार्मिक होने का दावा सकता है और प्रारम्भिक कर्तव्यों के करने से छुटकारा जाता है, इसलिए इस उपदेश को ईसाई और ग़ैर-ईसाई नों ही बहुत जल्द स्वीकार कर लेते हैं।

थोड़ेही दिन हुए, पोप लिओ ने साम्यवाद पर एक पुस्तक नी है। 'मिलकियत न्याय विरुद्ध है'—साम्यवादियों के इस द्धान्त को अस्वीकार करने के बाद उन्होंने लिखा है कि पने और अपने कुटुम्ब के सुख को कम करके दरिद्र की हायता करना ज़रूरी नहीं। दुखी दरिद्र, की सहायता के र किसी को अपनी आवश्यकतायें कम करने की ज़रूरत हीं क्योंकि प्रत्येक आदमी को अपनी हैसियत और माज के रस्म व रिवाज के अनुसार रहना चाहिये। जब सियत के अनुसार अपनी आवश्यकताएं पूरी हो जायें, तब कुछ बचे उससे दुखी और दरिद्र की सहायता करनी हिये।"

ईसाई धर्म ग्रंथ त्याग की शिक्षा से परिपूर्ण होते हुए र ईसा के इस वचन के होते हुए कि बिना त्याग के र्मिक जीवन का व्यतीत करना असम्भव है—धर्म ग्रन्थ ऐसे स्पष्ट वाक्यों के मौजूद होते हुए कि धर्म के लिए ता-माता भाई-बन्धु और प्राण तक का त्याग आवश्यक है,

लोग यह विश्वास रखते हैं कि बिना अपनी आदतों औ
सुखों के त्यागे वे मनुष्य सेवा कर सकते हैं।

झूठे ईसाई लोगों का यही सिद्धान्त है। सर्व सि
लोग-स्वतंत्र विचार के लोग-भी इसी बात के अनुसार 
करते हैं। इनका विश्वास है और दूसरों को भी यह 
बातका विश्वास दिलाना चाहते हैं, कि वे अपनी आवश्य
ताओं को कम किए बिना अपने मन और इन्द्रियों पर 
किए बिना ही वे मनुष्य और संसार की सेवा कर सकते
अर्थात् धार्मिक जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

( ३ )

पुराने ज़माने में भी जब ईसाई-धर्म का प्रादुर्भाव नहीं
था, सुकरात और उनके बाद के समस्त धर्म-गुरु त्याग 
इन्द्रियनिग्रह को धार्मिक जीवन का मूलाधार मानते थे 
यह आवश्यक समझते थे कि त्याग और इन्द्रियनिग्र
सीढ़ी में गुज़र जाने के बादही मनुष्य अन्य सद्गुणों का 
हो सकता है। उस ज़माने में यह बात साफ़ थी कि जो म
अपने ऊपर वश नहीं रखता जिसने अपने हृदय को 
असंख्य-पूर्ण प्रवृत्तियों में बांध रखा है, और सब विषयों
वासना और प्रवृत्तियों को आगृत करता है वह धार्मि
जीवन व्यतीत नहीं कर सकता। उस ज़माने में 
स्पष्ट थी कि उपवास जैसा अहिंसा की नींव को, स्वाधी

और न्यायपरायणता का विचार तक हृदय में लाने के पहिले मनुष्य को अपने पर वश रख सकने के योग्य हो जाना चाहिए।

किन्तु आज कल के लोगों के मतानुसार इस क़िस्म की किसी भी ध्यान की आवश्यकता नहीं। आज कल के लोग यह मानते हैं कि वह आदमी भी जिसने अपने व्यसनों को पराकाष्ठा तक पहुंचा दिया है और जो ऐश व आराम में मस्त है, धार्मिक जीवन व्यतीत कर सकता है।

आज कल लोग व्यसनों और आवश्यकताओं के कम करने को धार्मिक जीवन की पहली क्या आखरी शर्त भी नहीं समझते। इसे वे बिलकुल अनावश्यक मानते हैं।

आज कल के लोगों का तथा आजकल की शिक्षा का तो यह सिद्धान्त है कि अपनी आवश्यकताओं को बढ़ाना पाप नहीं बल्कि इसके विपरीत एक अच्छी बात है, और उन्नति, सभ्यता, योग्यता और कुशलता का चिन्ह है। अपने आपको सभ्य और नागरिक कहने वाले लोग ऐश व आराम की ज़नानी ज़िन्दगी को हानिकर नहीं समझते बल्कि बहुत लाभदायक जानते हैं और कहते हैं कि आवश्यकताओं के बढ़नेसे मनुष्यकी उन्नति अर्थात् सद्गुणोंका पता चलता है।

जिनकी आवश्यकतायें जितनी ही ज्यादा हों और जिन-

माता से पूरा पूरा बदला ले सकूं। जादूगरनी ने कहा कि इस बच्चे को अमुक स्थान पर ले जाओ, वहां पर पहुंच कर तुम इस बच्चे द्वारा अपने दुश्मन से पूरा पूरा बदला ले सकोगी। वह स्त्री वहीं गई, लेकिन देखती क्या है कि उस बच्चे को एक संतति होन धनी आदमी ने गोद ले लिया इस पर उस औरत ने जादूगरनी के पास जाकर उसे बुरा भला कहा, लेकिन जादूगरनी ने कहा कि घबड़ाओ नहीं। यह बच्चा अपने धनी पिता के यहां बहुत लाड़ प्यार और नाज़ व नज़ाकत के साथ पलता रहा। इसको देख यह औरत बहुत परेशान हुई, किन्तु जादूगरनी ने फिर ढाढ़स बंधा दी। अन्त में वह समय आगया जब उस औरत को पूर्ण संतोष हो गया और वह अपने शत्रु से काफ़ी बदला ले सकी क्योंकि लड़का जो कि नाज़ व नज़ाकत के साथ पाला गया था, ऐश व आराम में पड़ कर धीरे-धीरे चरित्रहीन होगया उसे शारीरिक कष्टसहने पर विवशहोना पड़ा, उसे उस दरिद्रता और नीचता का सामना करना पड़ा जिसके मुकाबिले योग्य वह न था। अन्त में वह दुर्गुणों के वश में न सका। उसने अपने चरित्र सुधारने का प्रयत्न किया, किन्तु व्यसन और काहिली से दूषित उसके नाजुक शरीर में शक्ति ही नहीं बाक़ी थी। दिन प्रति दिन वह गिरता गया शराब बदमाशी में अपने को भूल गया, निन्दनीय पापों अपराधी हुआ। अन्तमें पागल होकर उसने आत्महत्या कर

यदि हम आजकलके कुछ बच्चोंकी शिक्षापर नज़रडालें तो वास्तव में हमारे रोंगटे खड़ेहो जायेंगे। कट्टर से कट्टर दुश्मन के बच्चों के हृदय में भी कोई इस तरह से कमज़ोरी और पाप का बाक़ायदा संचार न करेगा जैसा आजकल के माता पिता विशेष कर मातायें करती हैं। बच्चों को नज़ाकत सिखाई जाती है, ऐसे समय पर जब कि यह नन्हें प्राणी अपने धार्मिक उद्देश्यों से बिल्कुल अनभिज्ञ होते हैं। आत्म-संयम और इन्द्रियों पर वश रखने की आदत बिलकुल ही सिखाई नहीं जाती। साथ ही साथ प्राचीन देशों की शिक्षा के सिद्धान्तों के विरुद्ध आत्मसंयम और इन्द्रिय निग्रह करने की योग्यता का भी सत्यानाश कर दिया जाता है। उसे मेहनत करना नहीं सिखाया जाता, लाभदायक काम करने की तालीम नहीं दी जाती, एकाग्र चित्त होना, दृढ़ रहना, बिगड़े को बनाना थकने की आदत डालना, कार्य-सिद्धि के आनन्द का उपभोग करना उसे नहीं सिखाया जाता। उसे सिखाया क्या जाता है, काहली, और मेहनत से बनीहुई चीज़ों का नाश करना। रुपया देकर वह चीज़ें ख़रीदता और फिर नाश करता है। उसे यह ज़रा भी संकोच नहीं होता कि इन चीज़ों के बनाने में कितनी मेहनत लगी होगी। उसको उस शक्ति का अपहरण कर लिया जाता है जिस से वह उत्तम सद्गुणों को प्राप्त हो सकता था अर्थात् वह विचार-शक्ति से वंचित हो जाता है और उसे ऐसे संसार में क़दम रखना पड़ता है

जहां यह जानने की आवश्यकता पड़ती है कि न्याय, नीति और मनुष्य सेवा, क्या चीज़ है ? उस आदमीका हृदय नैतिक दृष्टि से दुर्बल है; वह संसार में अपने कर्तव्य की जिज्ञासा ही नहीं करता और न वास्तविक धार्मिक जीवन और पापमय जीवन में कोई अन्तर ही देखता और संसार में पाप का प्राबल्य देखते हुए भी सन्तोष पूर्वक ज़िन्दा रह सकता है। ऐसी हालत में मनुष्य को सब चीज़ें उचित मालूम होती हैं और वह अपने कर्तव्य पथ से अनभिज्ञ रहता हुआ मृत्यु पर्यन्त जीवित रहता है, किन्तु ऐसी स्थिति सब की नहीं होती । व्यसनों और इन्द्रिय-सुखों से परिपूर्ण जीवन के पापमय होने का ज्ञान शनैः शनैः स्वभाव से ही मनुष्य के हृदय में हो जाता है । परिणाम यह होता है कि मनुष्य के हृदय में कर्तव्य की जिज्ञासा पैदा होती है, नैतिक संग्राम आरम्भ होता है और अन्त में विरले ही धर्म की विजय होती है। मनुष्य अनुभव करता है कि मेरा जीवन पापमय है और मेरा यह कर्तव्य है कि मैं अपने जीवन को शुरू से ही पवित्र कर डालूं । इसके लिए वह कोशिश करता है, किन्तु वे लोग जिनके हृदय में पहले ऐसाही संग्राम हुआ था और पराजित हो चुके थे, हर एक तरफ से अपने जीवन को सुधारने की कोशिश करनेवाले व्यक्तिपर आक्षेप करना शुरू करते हैं और अनेक रीतियोंसे उसपर इस बात का प्रभाव डालते

कोशिश करते हैं कि जीवन सुधारने का प्रयत्न व्यर्थ है। पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिए आत्मसंयम और त्याग की आवश्यकता ही नहीं। स्वादिष्ट भोजन के गुलाम होते हुए, बढ़िया और सुन्दर वस्त्र पहनते हुए, काहिली करते हुए और व्यभिचार भी करते हुए आदमी धार्मिक जीवन व्यतीत कर सकता है। इस संग्राम का अन्त अक्सर दुःखपूर्ण होता है। या तो वह अपने हृदय की दुर्बलता के वश हो लोगों के आक्रमणों के सामने सर झुका देता है, अपने अन्तःकरण की आवाज़ को दबा देता है, अपनी बुद्धि को संकुचित कर के अपना पापमय जीवन क़ायम रखता है और वह विश्वास कर लेता है कि धर्म में केवल विश्वास रखने के कारण ही विज्ञान और कला की सेवा करके मैं मुक्त हो जाऊंगा, या वह अपना संग्राम जारी रखता है जिससे उसका दमाग़ फिर जाता है और वह आत्महत्या कर लेता है। ऐसा बहुत कम होता है कि अपने चारों ओर के प्रलोभनों से घिरे हुए आज कल की समाज का आदमी उस सत्यता को समझ सके जो हज़ारों वर्ष पहले सभी बुद्धिमान लोगों को मान्य थी; अर्थात् इस बात को समझ ले कि धार्मिक जीवन व्यतीत करने की पहली शर्त यह है कि पापपूर्ण जीवन का त्याग किया जाय, और उत्तम सद्गुणों की प्राप्ति के लिये पहले पहल आत्मसंयम, इन्द्रियनिग्रह और त्याग करने की धीरे २ कोशिश की जाय।

आदमी थे जो यह मानते थे कि स्वार्थासक्त, विलासी और कामातुर आदमी दुनियां की भलाई कर सकता है। अगर हम धार्मिक दृष्टि को छोड़ दें और केवल साधारण न्याय और नैतिकी दृष्टि से ऐसे जीवन पर नज़र डालें तो हमें स्पष्ट मालूम होजायगा कि ऐसे आदमी से किसी प्रकार की भलाई की आशा करना फ़ुज़ूल है।

हमारी वर्तमान समाज के प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि यदि वह नवीन जीवन आरम्भ करना चाहता है या नवीन जीवन में प्रवेश करने की इच्छा रखता है तो वह वर्तमान समाज में मनुष्य-जीवन को दुर्व्यसनी बनाने वाले कारणों का नाश करना आरम्भ करदे।

लोगों से जब यह कहा जाता है कि तुम अपने पापमय जीवन को तब्दील करदो तो वे अक्सर यह जवाब दिया करते हैं कि वर्तमान परिस्थिति में ज़िन्दगी को तब्दील करना बहुतही अस्वाभाविक और हास्यजनक होगा। लोग समझेंगे कि यह आदमी असाधारण बनना चाहता है और अपनी शोहरत चाहता है, इसलिए जीवन के तब्दील करने का ख़्याल हुआ है। यह बात इसलिए कही जाती है कि लोग अपने जीवन में परिवर्तन न करें। अगर हमारा जीवन शुद्ध और पवित्र होगा, तो हमारे समाज की रीतियों के अनुसार जो काम किया जाता वह भी शुद्ध और पवित्र होगा। किन्तु

नुष्य के जीवन में स्वार्थ और परोपकार कितना २ पाया
जाता है। जितनाही कम स्वार्थ किसी के जीवन में पाया
जाय, जितनाही कम मनुष्य अपनी परवाह करे, तथा जित-
नाही ज़्यादा वह दूसरों की परवाह करे, और जितनाही
अधिक वह उनकी सेवा के लिए कोशिश करता रहे, उसका
जीवन उतनाही उच्च है।

संसार के महापुरुषों ने धार्मिक और उपकारी
जीवन के यही अर्थ समझे हैं। और सीधे से सीधे
आदमी भी धार्मिक और उपकारी जीवन के आज तक
यही अर्थ समझते हैं। जितनी ही अधिक मनुष्य दूसरों
की सेवा करे, और जितनी ही कम वह अपनी सेवा करावे,
वह उतना ही भला आदमी है। जितनी ही अधिक वह और
से अपनी सेवा कराता है और जितना ही कम वह दूसरों
की सेवा करता है वह उतना ही बुरा आदमी है।

अगर किसी आदमी में सेवा करने की प्रवृत्ति मौजूद
है और वह अपने से ज़्यादा प्रेम करने लगे, स्वार्थी हो
जाय और अपने व्यक्तिगत सुख के प्राप्त करने के प्रयत्न के
बढ़ाता जाय तो उस मनुष्य की सेवा तथा परोपकार करने
की मनोवृत्ति केवल उतनी ही शिथिल न होगी जितनी कि
उसने स्वार्थ की वृत्ति के बढ़ाया है, बल्कि उससे कहीं
ज़्यादा शिथिल होजायगी। दूसरों के भोजन पहुंचाने के

स्थान पर अगर किसी ने खुद ही ज़रूरत से ...
शुरू कर दिया तो वह केवल दूसरों की सेवा के ही
नहीं होगया बल्कि उसमें से परोपकार करने की सम्भा
तक जाती रही।

यदि हम दूसरों की सेवा करना चाहें
और दूसरों के साथ, प्रेम करना चाहते हैं तो ...
नहीं बल्कि वास्तव में हमें दूसरों से अपनी ...
कराती, तथा अपने से प्रेम करना छोड़ देना चाहि
हम कहा तो करते हैं कि हम दूसरों का हित चाहते
करते हैं, अपने हृदय में इस बात का दृढ़ विश्वास
कर लेते हैं, किन्तु असल बात यह होती है कि हम दू
के साथ केवल ज़बानी प्रेम रखते हैं, वास्तव में प्रेम
अपने स्वार्थ से होता है। हम दूसरों को खाना देना भू
भूल जाते हैं, किन्तु स्वयं खाना खाकर सोना ...
नहीं भूलते। इसलिए यदि हम वास्तव में दूसरों की
करना चाहते हैं तो हमें यह सोचना चाहिए कि दूसरों
हित और सेवा के लिए अपने खाने और सोने को
भूल जाना है, जैसे आज कल हम दूसरों को खि
और सुलाना भूल जाते हैं।

आज कल 'धार्मिक और उपकारी जीवन, ...
परोपकारता तथा 'भला आदमी' हम उसे कहते हैं

ऐश व आराम में नाज़ुक और ज़नानी ज़िन्दगी व्यतीत करता है। लेकिन सच तो यह है कि इस प्रकार जीवन व्यतीत करनेवाला मनुष्य चाहे वह स्त्री हो या पुरुष—बड़े अच्छे चरित्र का हो सकता है, नर्म हो सकता है, दयालु हो सकता है—किन्तु धार्मिक जीवन कदापि व्यतीत नहीं कर सकता। जैसे वह चाकू, जोकि तेज़ नहीं किया गया है अच्छे से अच्छे लोहे का तथा अच्छे से अच्छे कारीगर द्वारा बने होने पर भी काट नहीं सकता। धार्मिक जीवन व्यतीत कर सकने के लिए तथा भले आदमी बनने के लिए यह आवश्यक है कि हम दूसरों को अधिक सेवा करें, और दूसरों से उनके मुक़ाबिले में कम सेवा लें। लेकिन ऐश व आराम का आदी नाज़ुक आदमी ऐसा नहीं कर सकता। क्योंकि पहली बात तो यह है कि उसका स्वयं ही बहुत ज़्यादा ज़रूरियात रहती हैं (ज़रूरियात के ज़्यादा होने का कारण यह नहीं कि वह स्वार्थी है बल्कि इसका कारण यह कि उसने अपने आप को अनावश्यक ज़रूरियात का आदी बना लिया है जिनके छोड़ने पर उसे कष्ट होगा) दूसरी बात यह है कि दूसरों से सेवा ले लेकर वह स्वयं अपनी आत्मा को निर्बल कर लेता है, काम कर सकने की योग्यता से वंचित हो जाता है, इस लिए वह दूसरों की सेवा नहीं कर सकता। उस नाज़ुक आदमी से जो कि मुलायम गद्दों पर बड़ी देर तक सोया करता है, जो दूध

सोता है—इसके अलावा उसके कमरे को जाड़ों में गरम और गरमियों में ठंडा रखने की अनेक तरकीबें की जाती हैं और मच्छरों तथा अन्य कीड़ों मकोड़ों को आवाज़ से बचने के लिए इन्तिज़ाम किया जाता है। वह सोया करता है और उसके मुंह धोने के लिए तथा उसके नहाने के लिए गरम या ठंडा पानी तय्यार हुआ करता है। चाय, काफ़ी या और कोई चीज़ उसके पीने के लिए बनाई जाती है, जिसे वह उठतेही पीता है। उसके कई जोड़े जूते जो उसने कल पहन कर मैले कर डाले हैं, साफ़ हुआ करते हैं; यहांतक कि वे शीशे के समान चमकने लगते हैं और उनमें एक धब्बा भी मिट्टी का नहीं लगा रह जाता। इसी तरह दूसरे लोग उसके जाड़े, गरमी के—हर एक ऋतु के—कपड़ों की सफ़ाई में लगे रहते हैं। उसके लिए खूब साफ़ किया हुआ, कलफ़ और इस्तरी किया हुआ कपड़ा तय्यार किया जाता है जिसमें अनेक कमीज़ के बटन, तथा कफ़ के बटन लगे रहते हैं और इनकी देखभाल के लिए बहुत से आदमी मुक़र्रर रहते हैं।

अगर वह आदमी तेज़ है तो जल्दी उठ बैठता है, यानी सात-बजे लगभग इन नौकरों से तीन घंटे बाद। सोने और टहलने के कपड़ों के अलावा अन्य सामान के लिए इसके तय्यार रहते हैं। वह उठ कर मुंह हाथ धोता है बदन साफ़ करता है, बाल संवारता है जिसमें अनेक कंघियां

और ब्रुश काम में आते हैं। नहाते वक्त वह पानी और साबुन बहुत ज़्यादा इस्तेमाल करता है। अंगरेज़ लोगों को तो इस बात का एक प्रकार का अभिमान है कि वे नहाते मल मल कर साबुन लगाते हैं और बहुत ज़्यादा पानी इस्तेमाल करते हैं।

इसके बाद वह कपड़ा पहिनता है और एक ख़ास शीशे के सामने, जो और कमरों में लटके हुए शीशों से निराला रहता है, जाकर बालों में कंघी करता है।

इस के बाद वह अपनी ऐनक अपने साथ लेता है, कुछ चीज़ें अपनी जेबों में रखता है। नाक साफ़ करने का रूमाल, जेबी घड़ी - हालां कि वह जिस जिस कमरे में जाता है वहां घड़ी उस में ज़रूर मौजूद रहती है - और साथ ही सब कुछ रुपये पैसे और नोट इत्यादि भी लेता है। छोटे छोटे कार्ड भी साथ लेता है जिन पर उसका नाम छपा रहता है, वह इस लिए कि किसी दूसरे को अपने नाम बताने की या लिखने की उसे तकलीफ़ न गवारा करनी पड़े। वह पाकेट नोटबुक और पेन्सिल इत्यादि भी पास रखता है। स्त्रियों का कपड़ा इससे ज़्यादा होता है उसमें पिन, सेफ्टीपिन, हेयरपिन, और ब्रुश इत्यादि काम में आते हैं।

जब यह सब काम ख़त्म होजाते हैं तब उसका दिन बाक़ायदा शुरू होता है। दिन के आरम्भ होते ही पहला काम

लेकिन अच्छी जिन्दगी तो उसकी है जो दूसरों के सा[illegible] अच्छाई करे । जो आदमी इस तरह रहता हो और जिसकी ज़िन्दगी इस तरह गुज़रती हो, वह मनुष्य मात्र का हित [illegible] कर सकता है । मनुष्यमात्र का हित करने के पहिले उ[illegible] मनुष्यमात्र के साथ अहित करना छोड़ देना चाहिये । अग[illegible] उनसब पापों का ख़याल कियाजाय जो यह आदमी [illegible] नित्य-प्रति लोगोंके साथ किया करता है तो मालूम हो[illegible] कि ऐसा आदमी मनुष्यमात्र का कोई हित नहीं कर[illegible] और यदि वह अपने हानिकर कामों के अहितकर परिणा[illegible] को मिटाना चाहे तो उसे बहुत प्रायश्चित के काम कर[illegible] होंगे । किन्तु वह जिसकी आत्मा कामातुर जीवन से निर्बल होगई है कोई भी अच्छा काम करने के योग्य नहीं । अगर वह मारकस औरेलियस के समान ज़मीन पर लेटता तो यह उसके लिये शारीरिक और धार्मिक दृष्टि से कहीं बेहतर होता । नरम गद्दे और मुलायम तकिये बनाने की मेहनत बच जाती । धोबिन को, जो कि निर्बल है जिसे अपने बच्चे के पालने--पोसने में अनेक कठिनाइयाँ उठानी पड़ती हैं, इस हृष्ट पुष्ट आदमी के कपड़ा को साफ़ करने में तकलीफ़ें न उठानी होतीं । अगर यह सुबह उठ[illegible] और रात को जल्द सोजाता तो जो कुछ मेहनत [illegible] पर चिक डालने या रोशनी करने में होती, वह बच सकती थी । अगर यह यहीं कुरता पहन कर सोजाता जिसे [illegible]

कोई भी रस्म हो, कोई भी खुशी पड़े, कोई भी संस्कार हो सभी में खाना पहली बात है।

सफ़र करते हुए लोगों को देखिये। इनको देखकर आपको साफ़ पता चल जायगा कि लोग खाने को कितना महत्व देते हैं। पहला प्रश्न उनका यही होता है कि भोजन का अच्छा प्रबन्ध कहां है? किसके यहां सब से स्वादिष्ट भोजन मिलता है? जिस समय लोग खाना खाने को आते हैं, उनकी ओर देखिए। खूब अच्छे अच्छे कपड़े पहने होते हैं, इत्र लगाए होते हैं और खाने को देखकर मुसकराते हैं और हाथ मलते हैं।

अधिकांश आदमियों की आत्मा को देखिये, उनकी हार्दिक अभिलाषा क्या होती है? खाने पीने की। लड़कों को सब से भारी सजा क्या बताई जाती है? यही कि तुम्हें सिर्फ रोटी दाल खाने को मिलेगा। किस मजदूर को सबसे ज्यादा तनख्वाह मिलती है? बावर्चियों को। घर की स्त्रियों का मुख्य काम क्या है? मध्यम श्रेणी की स्त्रियां किस विषय पर अधिकतर बातें करती हैं? यही न कि खाने पर।

उच्च श्रेणी के लोग अगर खाने पीने की बातें ज्यादा नहीं करते तो इसका कारण यह नहीं कि वे लोग अधिक सभ्य हैं और उच्च विचारों के समाज में रहते हैं, वरन यह कि उनके पास बड़े बावर्चियों का हमेशा मौजूद रहता है जो कि उनके भोजन

लेकिन अच्छी ज़िन्दगी तो उसकी है जो दूसरों के साथ अच्छाई करे। जो आदमी इस तरह रहता हो और जिसकी ज़िन्दगी इस तरह गुज़रती हो, वह मनुष्य मात्र का हित कर सकता है। मनुष्यमात्र का हित करने के पहिले उसे मनुष्यमात्र के साथ अहित करना छोड़ देना चाहिये। अगर उन सब पापों का ख़याल कियाजाय जो यह आदमी बिना जाने निम्य-प्रति लोगोंके साथ किया करता है तो मालूम होगा कि ऐसा आदमी मनुष्यमात्र का कोई हित नहीं कर सकता और यदि वह अपने हानिकार कामों के अहितकर परिणामों को मिटाना चाहे तो उसे बहुत प्रायश्चित के काम करने होंगे। किन्तु वह जिसकी आत्मा कामातुर जीवन से निर्बल होगई है कोई भी अच्छा काम करने के योग्य नहीं। अगर वह मारकस अरेलियस के समान ज़मीन पर लेटता तो यह उसके लिये शारीरिक और धार्मिक दृष्टि से कहीं बेहतर होता। नरम गद्दे और मुलायम तकिये बनाने की मेहनत बच जाती। धोबिन को, जो कि निर्बल है जिसे अपने बच्चे के पालने-पोषने में अनेक कठिनाइयें उठानी पड़ती हैं, इस हृष्ट पुष्ट आदमी के कपड़ों की सफ़ाई करने में तकलीफें न उठानी होतीं। अगर वह सुबह उठता और रात को जल्द सोजाता तो जो कुछ मेहनत खिड़कियों पर चिक डालने या रोशनी करने में होती, वह बच सकती थी। अगर वह वही कुरता पहन कर सोजाता जिसे वह

न नर पहने था, नंगे पैर फ़र्श पर या दालान में चलना.
डे पानी से नहा लेना अर्थात् वैसे ही रहना जैसे कि
नके सेवकगण रहते हैं तो यह लोगों को बहुत मेहनत
चा देता। उसके कपड़े बनाने में, उसके स्वादिष्ट भोजन
यार करने में और उसके आमोद-प्रमोद में लोगों की जो
किलाएं होती हैं, कदापि न होतीं।

इसलिए, अपनी ऐश व आराम की ज़िन्दगी को त्यागे
र बिना ऐसा आदमी मनुष्य मात्र का हित कैसे कर सकता
या धार्मिक जीवन कैसे व्यतीत कर सकता है ! "जिस
दमी के हृदय में धर्म का ख़याल है, जो मनुष्य की सेवा
और प्यार के सिद्धान्त में विश्वास करता है, वह अपनी
श व आराम की ज़िन्दगी को त्यागे बिना और व्यसन की
ज़ों के बहिष्कार किये बिना ( जिनके बनने में लोगों
ा हानि होती है ) कदापि नहीं रह सकता।

अगर तम्बाकू के कारख़ाने में काम करने वाले लोगों
ा किसी को दया आती है तो उसका पहला काम यह है
कि वह तम्बाकू पीना छोड़ दे, क्योंकि तम्बाकू पीते रहने से
और तम्बाकू ख़रीदते रहने से वह तम्बाकू बनाने वालों को
उत्साहित करता है जिससे कि उन लोगों के स्वास्थ्य का
नाश होता रहता है।

लेकिन आजकल के आदमी इस तरह विचार नहीं करते। यह सीधा सादा तरीक़ा जो हरएक आदमी के समझ में आ सकता है, काम में नहीं लाते। वे इसपर अनेक अजीब और टेढ़े विचार प्रकट किया करते हैं। उनका मत है कि व्यसन की चीज़ों को छोड़ने की आवश्यकता नहीं मज़दूरों की दशा से सहानुभूति प्रकट कर देना, मज़दूरों के पक्ष में व्याख्यान झाड़ देना और क़िताब लिख डालना काफ़ी है, चाहे उनकी मेहनत से पैदा हुई चीज़ों का इस्तेमाल हम जारी ही रखें।

कुछ आदमियों का कहना है कि दूसरों के हानिकर श्रम से पैदा हुई चीज़ों का इस्तेमाल उचित है, क्योंकि अगर हमने उसका इस्तेमाल न किया तो दूसरे करेंगे। यह कहना वैसा ही है जैसे कोई कहे कि हानिकर शराब का पीना ज़रूरी है, क्योंकि अगर हमने न पिया तो कोई दूसरा ज़रूर पियेगा।

कुछ आदमियोंका कथन है कि व्यसन की चीज़ों का इस्तेमाल करना व्यसन की चीज़ों के बनाने वालों के लिए हितकर है, क्योंकि इस तरह से उन मज़दूरों को धन प्राप्त होता है और इसी से वह अपना जीवन व्यतीत कर सकते हैं इससे यह मालूम होता है, मानो यह सम्भव ही नहीं कि वह लोग बिना उन चीज़ों के बनाए हुये ज़िन्दा रह सकें जिनके

जाने में इनको हानि पहुंचती है और जो हमारे लिए
यं है ।

इस सबका कारण यह है कि लोगों को विश्वास हो
गया है कि धार्मिक जीवन के प्रथम और परमावश्यक गुण
को प्राप्त किये बिना ही आदमी धार्मिक जीवन व्यतीत कर
सकता है । धार्मिक जीवन का यह प्रथम और परमावश्यक
गुण त्याग है ।

( ८ )

त्याग के बिना धार्मिक-जीवन न हुआ है और न
हो सकता है । त्याग के बिना धार्मिक-जीवन की कल्पना
तक असम्भव है । धार्मिक-जीवन में त्याग ही सारा
उन्नति क्रमश है ।

वस्तुओं में एक प्रकार का ज़ीना पाया जाता है । इस
लिए यदि हमें ऊंचे चढ़ना है तो हमें पहली सीढ़ी पर क़दम
रखना पड़ेगा । और यह पहला गुण जिसे मनुष्य को
प्राप्त कर लेना चाहिये और जिसके प्राप्त किये बिना किसी
अन्य गुण का प्राप्त करना असम्भव है, आत्मसंयम और
इन्द्रिय-निग्रह है ।

ईसाई धर्म के अनुसार आत्मसंयम में त्याग शामिल है,
इसलिए यह कहना ठीक होगी कि त्याग किंवा आत्मसंयम

सम्भव है। त्याग के बिना कोई भी ईसाई धर्म में बताये हुए सद्गुणों का प्राप्त करना असम्भव है। इसका कारण यह नहीं कि किसी व्यक्ति ने लिखा है बल्कि यह बात स्वभाव से ही आवश्यक है।

प्रत्येक प्रकार के धार्मिक जीवन का पहला ज़ीना त्याग है।

त्याग भी एकदम से प्राप्त नहीं हो सकता। यह भी क्रमशः प्राप्त होता है।

त्याग का अर्थ यह है कि मनुष्य इन्द्रियों की प्रवृत्तियों से स्वतंत्र होकर मनकी वासनाओं को बुद्धि के अधीन कर दे। किन्तु मनुष्य में अनेक वासनायें पाई जाती हैं, इस लिए उन सब वासनाओं पर विजयी होने के लिए पहले मूल वासनाओं पर अर्थात् उन वासनाओं पर कब्ज़ा करना सीखना चाहिए जिनके कारण मनुष्य में अन्य मिश्रित और प्रबल वासनायें पैदा हो जाती हैं। मनुष्य में कुछ मिश्रित वासनायें हैं। जैसे शरीर को सुन्दर बनाने की वासना, खेल, तमाशा, बात-चीत करने की वासना, इत्यादि, और कुछ मूल वासनायें हैं जैसे अत्याहार, आलस्य और काम। अगर हम अपनी वासनाओं को वश करना चाहते हैं तो हमें पहले मूल वासनाओं को वश में करना चाहिए और वह भी बाक़ायदा और क्रमानुसार। किस वासना पर पहले कब्ज़ा करना चाहिए

-सदाचारी जीवन के लिए उपवास करना परमावश्यक शर्त है। किन्तु खूब खाना दुराचारी जीवन का एक अंग रहा है। अभाग्यवश इस दुर्गुण का आजकल के अधिकांश लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

आजकल के, और अपनी श्रेणी के लोगों के चेहरों की ओर नज़र डालिये तो इनके लटकते हुए गाल और ठुड्डी पर, मोटे-ताज़े हाथों पर, इनके तोंदों पर आपको बहुभक्षी जीवन के न मिट सकने वाले चिन्ह दिखाई देंगे। अपनी ही ज़िन्दगी की ओर देखिए, और इसबात पर ग़ौर कीजिए कि अधिकांश लोग किस नियत से काम करते हैं। अपने ही दिल से पूछिये कि अधिकांश लोग अपने जीवन का क्या उद्देश्य समझते हैं, तो आप को मालूम हो जायगा कि आज कल के अधिकांश लोगों का जीवनोद्देश्य जिह्वा की वासना को संतुष्ट करना अर्थात् स्वाद का सुख प्राप्त करना है। मेरे ख्याल में, ग़रीब से ग़रीब और अमीर से अमीर का मुख्य उद्देश्य पेट भरना ही हो रहा है। ग़रीब लोग अपनी दरिद्रता के कारण स्वाद के वशीभूत नहीं हो जाते। नहीं तो ज्योंही इनको काफ़ी समय और धन मिला त्योंही वे उच्चश्रेणी के लोगों की नक़ल करने लगते हैं, स्वादिष्ट और मीठे मीठे भोजन ख़रीदते हैं, और जितना हो सकता है खाते पीते हैं। जितनाही ये खाते हैं, उतनाही ये अपने आप को सुखी ही

कोई भी रस्म हो, कोई भी खुशी पड़े, कोई भी संस्कार हो सभी में खाना पहली बात है।

सफ़र करतेहुए लोगों को देखिये। इनको देखकर आपको साफ़ पता चल जायगा कि लोग खाने को कितना महत्व देते हैं। पहला प्रश्न उनका यही होता है कि भोजन का अच्छा प्रबन्ध कहां है ? किसके यहां सब से स्वादिष्ट भोजन मिलता है ? जिस समय लोग खाना खाने को आते हैं उनकी ओर देखिए। खूब अच्छे अच्छे कपड़े पहने होते हैं इतर लगाए होते हैं और खाने को देखकर मुसकराते हैं और हाथ मलते हैं।

अधिकांश आदमियों की आत्मा को देखिये, इनकी हार्दिक अभिलाषा क्या होती है ? खाने पीने की। लड़कों को सब से भारी सज़ा क्या बताई जाती है ? यही कि तुम्हें सिर्फ़ रोटी दाल खाने को मिलेगा। किस मज़दूर को सबसे ज़्यादा तनख़ाह मिलती है ? बावरची को। घर की स्त्रियों का मुख्य काम क्या है ? मध्यम श्रेणी की स्त्रियां किस विषय पर अधिकतर बातें करती हैं ? यही न कि खाने पर।

उच्च श्रेणी के लोग अगर खाने पीने की बातें ज़्यादा नहीं करते तो इसका कारण यह नहीं कि वे लोग अधिक सभ्य हैं और उच्च विषयों के मनन में लगे हैं, वरन यह कि उनके घरपर एक बावरची या दारोग़ा मौजूद होता है जो कि उनके भोजन

का उचित और काफी प्रबन्ध करता रहता है। अगर आप इन्हें भोजन के आनन्द से वंचित कर दीजिये तो आपको पता चल जायगा कि वास्तव में इनकी दिलचस्पी किस बात से है। इनके तमाम काम खाने के सवाल में आकर लीन हो जाते हैं। उनको सबसे ज्यादा दिलचस्पी इसी बात में होती है कि सब से स्वादिष्ट मिठाई कैसे तैयार हो, इत्यादि। कैसा भी काम हो, चाहे नाम-कर्ण संस्कार हो, या कोई मर गया हो, किसी की शादी हो अथवा कोई गिरजे की स्थापना होने वाली हो, विदाई हो, आगमन हो अथवा किसी महान पुरुष का, किसी विद्वान का जन्मदिन हो, मृत्यु-दिवस हो, लोग इकट्ठा होते हैं तो कहते हैं कि हम लोग बड़े गम्भीर काम के करने के लिए आये हैं किन्तु वह यह बात कहते ही हैं। क्योंकि वह जानते हैं कि इन अवसरों पर उन्हें कुछ न कुछ स्वादिष्ट और अच्छा खाने पीने को मिलेगा और इस लिए वे इकट्ठा होते हैं। ऐसे अवसर के कई दिन पहिले से दावत का इन्तिज़ाम शुरू हो जाता है, जिसके लिये पेशतर से ही अनेक जानवरों की हत्या की जाती है और उनकी बोटियां काट काट कर इकट्ठी की जाती हैं। बावरचीख़ाने में बावरची लोग और अन्य काम करने वाले खाना बनाने के काम में बड़े ज़ोरों से लग जाते हैं। काटने, भूनने, पकाने तलने इत्यादि में लोग बराबर लगे रहते हैं। माली फूलों के इकट्ठा करने में खूब परिश्रम करता है, सैकड़ों आदमी काम

करते हैं और हज़ारों दिनों में पैदा हुई चीज़ें खा ली जाती हैं और केवल इस लिए कि दो चार आदमी इकट्ठा होकर किसी महान आत्मा के बारे में वार्तालाप कर सके या किसी दम्पति को उनके गृहस्थाश्रम में प्रवेश के लिए बधाई दी गई।

मध्यम और नीच श्रेणी के लोगों में तो यह बात बिलकुल स्पष्ट होती है। जहां कोई शादी हुई, किसी की मृत्यु हुई या कोई छुट्टी पड़ी कि इन्होंने बेतरह खाना शुरू कर दिया। उच्च श्रेणी के लोग और शिक्षित समुदाय में इस बात को छिपाने के लिये अर्थात् यह दिखाने के लिये कि खाना गौण बात है और सिर्फ शिष्टाचार निमित्त होता है, बड़ी तरकीब काम में लाई जाती है। यह लोग इस बात को आसानी से ज़ाहिर कर सकते हैं क्योंकि यह लोग हमेशा सन्तुष्ट रहते हैं। यह लोग कभी भूखे ही नहीं होते।

यह लोग यह दिखाना चाहते हैं कि इन्हें खाने की दावत की–कोई ज़रूरत नहीं। इसे यह एक प्रकार का बोझ बतलाते हैं लेकिन एक मरतबा आप स्वादिष्ट खानों के स्थान में सिर्फ रोटी रख दीजिये या इसमें किसी हद बढ़िया चीज़ रखिए तो आपको वास्तविक स्थिति का पता चल जायगा। छिपी हुई बातें साफ़ ज़ाहिर हो जायेंगी और आप को मालूम हो जायगा कि इन लोगों को असल

मे इस बात को बिना जाने हुए कि अमुक काम की सिद्धि के लिए किस क्रम से काम करना चाहिए उस काम को करना असम्भव है, उसी तरह उपवास करना भी उस समय तक असम्भव है जब तक यह न जानलें कि भोजन के परित्याग के लिए अर्थात् उपवास के लिए पहले किस क्रम का करना ज़रूरी है।

हमारे जीवन में, सदाचारी और उपकारी जीवन के पहले जीने की तह में अर्थात हमारे भोजन में इतनी असभ्य और पापपूर्ण चीज़ें घुस गई हैं और इस पर इतने कम आदमियों ने विचार किया है कि हमारे लिए इस बात को समझ सकना ही असम्भव हो रहा है कि गोश्त रोटी खाकर आदमी धार्मिक या सदाचारी कदापि नहीं हो सकता है।

गोश्त रोटी खाते हुए धार्मिक या सदाचारी होने का दावा सुन कर हमें इस लिए आश्चर्य नहीं होता कि हम में एक असाधारण बात पाई जाती है। हमारे आंखें हैं लेकिन हम नहीं देखते। कान हैं, लेकिन हम नहीं सुनते। आदमी बदबूदार से बदबूदार चीज़, बुरी से बुरी आवाज़ और बदसूरत से बदसूरत चीज़ का आदी बन सकता है जिस के कारण यह आदमी उन बातों से प्रभावित नहीं होता जिससे कि अन्य आदमी प्रभा

े जाते हैं। यही हाल आज नैतिक क्षेत्र में हो रहा है
ोग समझते हैं कि हम गोश्त रोटी और स्वादिष्ट भोजन
ाते हुये उपकारी और सदाचारी बन सकते हैं।

उस रोज़ मैं अपने नगर तुला के स्लाटर हाउस को
र्थात् उस मकान को देखने गया था जिस में खाने के
िये पशु मारे जाते हैं। यह स्लाटर हाउस नवीन ढंग का
ना हुआ है, जैसा कि बड़े बड़े शहरों में बना रहता है
ोस में कि मारे जाने वाले जानवरों को कम से कम तक-
ीफ़ होने का प्रबन्ध रहता है। मैं त्योहार के दो रोज़
हले गया था। वहां पशुओं की संख्या बहुत ज़्यादा थी।

इसके बहुत पेश्तर "भोजन की नीतिमत्ता" नाम की पुस्तक
ढ़ने के बाद मैंने निश्चय किया था कि मैं अपनी ही
ांखों से वहां की सब बातें देखूंगा जो कि निरामिषो
िया कहा करते हैं। लेकिन मेरा हृदय वहां जाना मन्ज़ूर
ा करता था, क्योंकि मनुष्य का हृदय दुःखों को नहीं देखना
ाहता। इस लिए मैं स्लाटर हाउस का जाना बराबर
ुल्तवी करता रहा।

लेकिन उस रोज़ तुला ... ( मुझे एक किसान
मिला। यह आदमी ... ुरपेशेदार किसान नहीं
रहा था, इस लिये ... ा जानवरों के गलों पर

छुरा ही फेरा करता था । मैंने इस से पूछा कि क्या तुम्हें
जानवरों के मारने में दया नहीं आती ? उसने जवाब दि
जैसा कि अकसर लोग कहते हैं "दया आने की इस में क
सी बात है यह तो करना जरूरी है", किन्तु जब मैंने
यह बताया कि गोश्त खाना कोई जरूरी बात नहीं, त
मेरी बात मान गया और यह भी कहने लगा कि जानव
जियह करना बहुत दुःखजनक बात है । उसने कह
करूँ क्या, मुझे अपना पेट भरना है, कैसे भरूँ । पहले प
छुरी फेरने मुझे डर मालूम होता था । मेरे पिता ने
भी किसी जानवर के गले पर छुरी नहीं फेरी।"

इसके बाद मुझे एक ऐसे फौजी सिपाही से बा
का मौका मिला जो कि अब चिकवे का काम करने ल
जब मैंने उससे कहा कि किसी को मारना बुरा काम
यह बहुत चकित हुआ और कहने लगा कि यह काम
बहुत दिनों से चला आता है । लेकिन कुछ देर के
उसने मेरी बात मान ली और कहने लगा कि हां कि
करना वास्तव में बड़ी दुःखजनक बात है खास क
कि जानवर सीधा-सादा हो आप के ऊपर वि
कर के चला आवे और आप उसके गले पर छुरा फे

एक रोज़ हम मास्को से पैदल वापस आ रहे थे ि
रास्ते में गाड़ी मिल गई और हम लोग उसपर बैठ

गाड़ीवान शराब पिये था। जब हम एक गांव में पहुँचे तो देखा कि लोग एक मुड़े हुए, भूरे और मोटे सुअर को हलाल करने के लिए खींच रहे हैं। सुअर निराश हो कर बड़े ज़ोरसे चीख़ रहा था। ऐसा मालूम होता था, मानों कोई आदमी चीख़ रहा हो। हम जाहो रहे थे कि उन लोगों ने उस सुअरको मारना शुरू करदिया और एक आदमीने उसके गले पर छुरी चला दी, इस पर सुअर बेतरह चीख़ने लगा। उसकी आवाज़ दिल में चुभ जाती थी। सुअर आदमी से छूटकर भागा। खून उसके बदन से गिरता जाता था। मुझे दूर की चीज़ नहीं दिखाई देती, इसलिए मैं सब बातें अच्छी तरह न देख सका, मुझे सिर्फ आदमी के मांस के समान सुअर का गुलाबी मांस ही देख पड़ता था और दर्दनाक आवाज़ सुनाई देती थी, किन्तु कोचवान हर एक बात टकटकी लगाये देखता रहा। लोगों ने सुअर को पकड़ लिया और ज़मीन पर पटक कर उस पर अच्छी तरह छुरी चला दी। सुअर ने अब चीखना बन्द कर दिया, कोचवान ने लम्बी सांस ली और कहा:—

"क्या इन आदमियों को इन सब बातों के लिए कभी जवाब न देना पड़ेगा"

आदमी स्वभाव से ही हत्या करने से घृणा करता है। लेकिन मनुष्यों में इस स्वाभाविक गुण का नाश होगया है,

क्योंकि वे इस काम को बराबर देखते आये हैं, उनका उन्हें इस काम के करने पर मजबूर भी करती है । लोग यह भी कहते हैं कि ईश्वर ने जानवरों को मारकर खा जाने की आज्ञा दी है ।

शुक्र के दिन मैं तुला गया । मुझे यहां मेरे एक जान पहचान के आदमी मिल गये । मैं उनको अपने साथ लेकर स्लाटर हाउस का निरीक्षण करने चला ।

मेरे साथीने कहा "मैंने सुना है कि यह स्लाटर हाउस बड़ा अच्छा है और यहां का प्रबन्ध भी अच्छा है, किन्तु आज यहां पर जानवर मारे जा रहे होंगे तो मैं न जाऊंगा।"

मैंने पूछा क्यों ? मैं तो यही देखना चाहता हूँ अगर आप गोश्त खायेंगे तो जानवर तो जरूर ही मारे जायंगे ।

मेरे साथी ने कहा, "नहीं मैं न जाऊंगा" मुझे आश्चर्य यह हुआ कि यह आदमी स्वयं शिकारी था और चिड़िया और जानवर मारा करता था ।

हम लोग स्लाटर हाउस पहुंचे । इसमें घुसने के पहिले ही हम लोगों को सरेस की घृणित और सड़ी बदबू आने लगी । ज्यों ज्यों हम लोग आगे बढ़ते गये, त्यों त्यों यह बदबू और बढ़ती गई । यह कसाईखाना

क्योंकि वे इस काम को बराबर देखते आये हैं, उनका उन्हें इस काम के करने पर मजबूर भी करती है । लोग यह भी कहते हैं कि ईश्वर ने जानवरों को मारकर खा जाने की आज्ञा दी है ।

शुक्र के दिन मैं तुला गया । मुझे वहां मेरे एक जान पहचान के आदमी मिल गये । मैं उनको अपने साथ लेकर स्लाटर हाउस का निरीक्षण करने चला ।

मेरे साथीने कहा "मैंने सुना है कि यह स्लाटर हाउस बहुत अच्छा है और यहां का प्रबन्ध भी अच्छा है, किन्तु अगर यहां पर जानवर मारे जा रहे होंगे तो मैं न जाऊंगा।"

मैंने पूछा क्यों ? मैं तो वही देखना चाहता हूं। अगर आप भीतर जायेंगे भी जानवर तो जरूर ही मारे जायंगे ।

मेरे साथी ने कहा, "नहीं मैं न जाऊंगा" मुझे आश्चर्य यह हुआ कि यह आदमी स्वयं शिकारी था और चिड़िया और जानवर मारा करता था।

हम लोग स्लाटर हाउस पहुंचे। इसमें घुसने के पहिले ही हम लोगों को सड़ेस की घृणित और सड़ी बदबू मालूम होने लगी । ज्यों ज्यों हम लोग आगे बढ़ते गये, त्यों त्यों यह बदबू और बढ़ती गई । यह कसाईखाना बड़ा

मोती और लाल ईंटों का बना था। इसमें बड़ी बड़ी दालानें और ऊंचे ऊंचे धुए घर थे। हम लोग दरवाज़े से घुसे। दाहिनी तरफ़ एक मैदान था जिसमें जंगल लगा था।

इस मैदान में हफ़्ते में दो दिन जानवर बेचने के लिये लाये जाते थे। इसी के एक कोने में पहरेवालों के वास्ते एक छोटी सी कोठरी थी। इस मैदान के बांई ओर कमरे थे जिनके दरवाज़े गोल थे। इन कमरों में जानवर मार कर टांगे जाते थे। पहरे वालों की कोठरी की दाहिनी ओर ६ क़साई अपना अपना औज़ार लिये बैठे थे, इन के शरीर भर में रक्त लगा हुआ था और इनकी आस्तीनें कोहनियों से ऊपर तक चढ़ी हुई थीं। इन्हों ने अपना कार्य आधे घंटे पहले ही ख़तम कर दिया था, इस लिए आज हम लोग कमरे को ख़ाली ही देख सके, यद्यपि दोनों तरफ़ के दरवाज़े खुले हुए थे तो भी गरम ख़ूनकी बदबू आ रही थी। इस कमरे का फ़र्श दालचीनी के रंग की भांति रंगा हुआ था और बहुत चमक रहा था। फ़र्श के गड्ढों में काले रंग का गाढ़ा ख़ून भरा हुआ था। हम लोगों को एक क़साई ने ज़िबह करने का तरीक़ा बताया और स्थान भी दिखाया। मैं उसकी बातों को अच्छी तरह समझ न सका। मैंने अपने मनमें कल्पना की कि ये लोग बड़ी

मैदान के जंगले के पास जानवर बेचने वालों की भीड़ थी। जानवर बेचने वाले स्वयं लम्बे लम्बे कोट पहने हुए हाथ में चाबुक और डंडे लिये हुए मैदान में इधर से उधर घूम रहे थे। वे किसी जानवर पर तारकोल से कोई निशान कर देते थे, जो मैदान से थान पर जाने वाले बैल या बछड़ों की निगहबानी करते थे। वे लोग रुपये पैसे के हिसाब में लगे हुए थे और इसकी ज़रा भी परवाह नहीं करते थे कि जानवरों को मारना अच्छा है या बुरा। जैसे वे इस बात की परवाह नहीं करते थे कि जो खून फर्श पर पड़ा है किस चीज़ का बना है। उस मैदान में कोई कसाई नहीं दिखलाई देते थे। वे सब उन कमरों में काम कर रहे थे। आज इस समय तक लगभग सौ बछड़े मारे जा चुके थे। मैं एक कमरे में घुसा, लेकिन दर-वाज़े पर रुक गया।

मेरे रुक जाने का कारण यह था कि एक तो मांस से भरी हुई गाड़ियां दरवाज़े से जा रही थीं, दूसरे ज़मीन पर खून की नदी बह रही थी और ऊपर से भी खून टपक रहा था। जो कसाई वहां पर थे, सब खून से भरे हुए थे। यदि मैं भीतर जाता तो मैं भी अवश्य खून से भर जाता। इस समय एक लटके मारे गये बैल की खाल उतारी जा रही थी और दूसरे दरवाज़े पर से आरे जा रही थी। तीसरे, उसी जगह एक बैल को

प्लैन्ट पर ले गया। उसकी जगह पर दूसरा लड़का बरतन लेकर बैठ गया। वह बरतन भी भरने लगा। बैल अपना पेट फुलाता और पिचकाता और टांगें झिटकता जाता था। जब खून बहना बन्द होगया तब एक कसाई ने बैल का सर उठाकर चमड़ा निकालना शुरू किया. किन्तु बैल पैर झिटकता ही जाता था। उस के सर का चमड़ा निकाल लिया गया और सर लाल २ देख पड़ने लगा. जिस में सफेद २ नसें भी दिखाई देती थीं। यह बैल अब वैसी ही दशा में हो गया जैसा कसाई लोग चाहते थे। इसका चमड़ा चीर कर दोनों ओर कर दिया गया. लेकिन बैल टांगें झिटकता ही रहा। तब दूसरे कसाई ने बैल की टांगें पकड़ लीं और उन्हें तोड़ कर काट डाला। किन्तु बैल का शेष टांगों में और पेट के एक सिरे से दूसरे सिरे तक तड़प होता जाता था। शेष टांगें भी काट ली गईं और जहां दूकान में और टांगें रक्खी हुई थीं वहां फेंक दी गईं। तब उन्होंने बैल के शरीर को घसीट कर जहां औज़ार रक्खे थे वहां पहुंचा दिया और बैल का कांपना और तड़पना वहीं समाप्त हो गया।

इस प्रकार मैंने दरवाजे पर खड़े खड़े इसी तरह चार बैल देखे। सबों की यही दुर्गति हुई। जब उन के सिर की खाल निकाल ली जाती थी तो वे इसी प्रकार ज़बान निकाल देते थे और पैर फड़फड़ाते थे। उन चारों दृश्यों ने [illegible]

केवल इतना पड़ जाता था कि कभी २ बैल के मारने का निशाना ठीक नहीं पड़ता था। क़साई लोग कभी ग़लती कर जाते थे जिस से बैल कूद जाता था, चिल्लाता था, और खून बहते बहते भाग जाने की कोशिश करता था। ऐसी अवस्था में उसे एक बड़े तख्ते से दबा देते थे और दूसरी बार वार करते थे जिससे वह गिर पड़ता था।

इसके बाद मैं दूसरे दरवाज़े से भीतर चला गया। यहां भी मैंने यही देखा। यहां मैंने एक विशेष बात यह देखी जो मैंने बाहर के दरवाज़े से न देखी थी, वह यह कि किस प्रकार वे बैल को दरवाज़े से मारने के लिए ले जाते थे। जब २ वे बैल की सींगों में रस्सी बांध कर थान पर से बाहर घसीटते थे, बैल खून सूंघ कर हठ करता और चिल्लाने लगता था और, कभी कभी धक्का देकर पीछे भी हट जाता था। दो मनुष्य बलपूर्वक बैल को नहीं घसीट सकते थे। इसलिये एक आदमी पीछे से पूंछ को खूब ज़ोर से ऐंठता था यहां तक कि पूंछ की हड्डी टूट जाती थी और पूंछ उखड़ जाती थी तब वह बैल आगे बढ़ता था।

एक आदमी के बैलों का ख़ातमा होने के बाद दूसरे का बैल लाया गया। यह बैल देखने में बहुत सुन्दर और का... रंग का था जिस पर सफ़ेद चित्तियां पड़ी हुई थीं और टां... भी सफ़ेद थीं। यह नौजवान, हट्टा कट्टा और बलवान था

र था। क़साई उसको घसीटने लगे। उसने अपना सर ज़मीन पर लटका लिया और आगे बढ़ने से इन्कार किया। जो क़साई पीछे आ रहा था उसने बैल की पूंछ पकड़ ली और ऐंठ दी। पूंछ की हड्डियां चूर २ हो गई और बैल रस्से से खींचने वालों को धक्का देता हुआ आगे दौड़ा और फिर अपनी सफ़ेद सफ़ेद ख़ूनी आंखों से बेपरवाही के साथ निहारता हुआ हठ करके खड़ा हो गया। एक बार फिर पूंछ की हड्डी तोड़ी गई और बैल दौड़ कर निश्चित स्थान पर पहुंच गया। क़साई गया और निशाना साध कर उसको मारा, परन्तु निशाना ठीक जगह पर न लगा, बैल कूद उठा, सर झटकने लगा, और ख़ून से तर इधर-उधर भागने लगा। दरवाज़े पर जितने लोग थे पीछे हट गए, किन्तु क़साइयों ने, जो इसके आदी हो गए थे, भय देख कर जल्दी से रस्सी थाम ली और पूंछ पकड़ ली। बैल फिर कमरे में आ गया। वहां उसका सर बड़े तख़्ते के तले दबाया गया जहां से वह अभी २ छुटा कर भागा था। क़साई की नज़र उसी स्थान पर थी जहां पर उसने पहले वार किया था, उसी स्थान पर जहां से कि ख़ून निकल रहा था। उस ने बैल को फिर मारा और वह सुन्दर जानवर, जो अभी २ ज़िन्दा था, धम से गिर पड़ा और सर तथा पैर झटकने लगा। क़साइयों ने उसका ख़ून बहा दिया और खाल निकाल ली।

एक कसाई ने सिर से खाल अलग करते समय गुर्रा कर कहा:- "कमबख्त! ठीक तरह से नहीं गिरा"।

पांच मिनट बाद इस काले रंग के बैल का चमड़ा निकाला हुआ यह लाल सर, जिसमें शीशे के समान चमकती हुई आंखें लगी थीं और जो पांच ही मिनट पहले बड़े सुन्दर रंग की झलक रही थी, उस बड़े तख्ते पर पड़ा रह गया।

उसके बाद मैं उस स्थान पर गया जहां छोटे २ जानवर मारे जाते थे। वह एक बड़ा भारी लम्बा कमरा था। इसमें मेज़ रक्खी थी। जिस पर भेड़ें और बछड़े ज़िबह किये जाते थे। यहां सब काम हो चुका था। उस बड़े कमरे में जहां खून की गन्ध आ रही थी केवल दो कसाई मौजूद थे। एक कसाई मरे बकरे की खाल में मुंह से फूंक मार रहा था और उस हवा से पेट फूल जाने पर उसे सहलाता था। दूसरा कसाई जो अभी बच्चा था एक टेढ़ी सिगरेट पी रहा था। इस कमरे, अन्धेरे और दुर्गन्धयुक्त कमरे में और कोई न था। मेरे आने के थोड़ी ही देर बाद एक मनुष्य जो पहिले सिपाही रह चुका था, काले रंग का [illegible] लिये हुए आया। जिसकी की गरदन पर [illegible] थी। उसने उसको मेज़ पर रख दिया। [illegible] का अभिवादन किया और प्रश्न किया कि कहाँ

मालिक ने तुम लोगों को कब छुट्टी दी । मुंह में सिगरेट दाबे हुए और छुरा हाथ में लिये कसाई ने उत्तर दिया कि हम लोग छुट्टी व्यतीत करने के लिये स्वतन्त्र हैं । बेचारा यह ज़िन्दा मेमना चुपचाप मुर्दे के समान मेज़ पर पड़ा था। केवल ज़रा २ पूछ हिला रहा था और जल्दी २ सांस ले रहा था । वह ज़रा सा सिर उठाए हुए था । सैनिक ने ज़ोर से इसके सर को पकड़ कर नीचा कर दिया । उस नौजवान लड़के ने बात चीत करते २ मेमने के सर को पकड़ कर छुरी से अलग कर दिया । मेमना कांपने लगा और पूंछ टेढ़ी हो कर शान्त हो गई । खून गिरने के पहिले ही इस बालक ने अपनी सिगरेट फूंक कर खतम करदी। खून बहने लगा और मेमना फड़फड़ाने लगा । बग़ैर किसी रुकावट के बात चीत जारी रही ।

मुर्गियों की, मुर्गियों के बच्चों की तथा अन्य पक्षियों की जिन्हें लोग खाते हैं, इसी निर्दयता से हत्या की जाती है। इन सब बातों के होते हुए भी लोग जो अपने आप को शिक्षित कहते हैं, इन जानवरों और पक्षियों की लाशों को हज़म कर जाते हैं और कहते हैं कि हम धार्मिक-जीवन व्यतीत करते हैं । स्त्रियां कहती हैं कि हम नाज़ुक हैं । हम साग-पात खा कर ज़िन्दा नहीं रह सकतीं । हमारा शरीर इतना दुर्बल है कि उसे मांस द्वारा पुष्ट

मांस खाने से पाशविक प्रवृत्तियां बढ़ती हैं, काम उत्तेजित होता है, व्यभिचार करने और मदिरा पीने की इच्छा होती है। इस बात के प्रमाण सच्चे, शुद्ध और सदाचारी नवयुवक विशेष कर स्त्रियां और जवान लड़कियां हैं जो इस बात को साफ़ २ कहती हैं कि मांस खाने के बाद काम की उत्तेजना और अन्य पाशविक प्रवृत्तियां आप ही आप प्रबल हो जाती हैं। मांस खा कर सदाचारी बनना असम्भव है। जब सदाचारी बनना होता है तो नवयुवक और नवयुवतियां मांस खाना छोड़ देती हैं।

मेरे कहने का क्या मतलब है ? क्या मेरा यह मतलब है कि सदाचारी बनने के लिए मांस ही का त्यागना आवश्यक है ? कदापि नहीं।

मेरे कहने का मतलब सिर्फ़ इतना है कि सदाचारी जीवन के लिए विशेष क्रम के साथ सात्विक कामों का करना आवश्यक है। अगर कोई आदमी वास्तव में सदाचारी और उपकारी बनना चाहेगा तो वह एक विशेष क्रम के अनुसार सदाचारी बनने की कोशिश करेगा। इस क्रम का पहला ज़ीना संयम और जितेन्द्रियता है।

संयम के लिए भी उसे क्रमानुसार काम करना पड़ेगा और इस क्षेत्र में उसका पहला काम जबान को अपने वश

में रखना होगा, अर्थात् उपवास की आदत डालनी होगी। जिह्वा को वश में रखने के लिए अर्थात् उपवास की सफलता का पहला ज़ीना मांस का छोड़ना होगा, क्योंकि काम उत्तेजित करने के दोष को छोड़ कर इसमें एक बड़ा दोष यह भी है कि यह एक अधर्म करने के पश्चात—हत्या—के पश्चात् प्राप्त होता है और यह स्वादिष्ट भोजन करने की लालसा को भी प्रबल करता है।

# अहिंसा परमो धर्मः

जब बादशाहों को प्राणदण्ड की सज़ा मिलती है, जैसे पहले चार्ल्स, सोलहवें लुई, और मैकसिको के मेक्सीमिलियन का हाल हुआ था, या जब वे अपने ही दरबारियों के क्रान्ति के कारण मार डाले जाते हैं जैसे तीसरे पीटर का, पॉल का और अनेक सुलतानों, शाहों और खानों के सम्बन्ध में हुआ है, तब इस विषय पर लोग चुप हो जाते हैं। किन्तु जब दरबारियों की क्रान्ति या बाक़ायदा मुक़द्दमा हुए बिना बादशाह लोग क़तल कर डाले जाते हैं जैसे चतुर्थ हेनरी, दूसरे अलेक्ज़ेंडर, आस्ट्रिया की महारानी, ईरान के शाह, और हम्बर्ट का हाल हुआ, तब ऐसी हत्याओं पर बादशाह शाहंशाह और उनके दरबारी लोग बहुत ज़्यादा आश्चर्य और घृणा प्रकट करने लगते हैं। ऐसा मालूम होता है मानो वह सब दूध के धोए हैं, इन्हों ने स्वयं कभी कोई हत्या की ही नहीं और न हत्याओं में कभी भाग ही लिया है। सच तो यह है कि क़तल किए गए बादशाहों में से सब से अच्छे बादशाह लोग ( जैसे दूसरे अलक्ज़ेण्डर और हम्बर्ट ) उन लाखों सिपाहियों की हत्या के ज़िम्मेदार, कर्त्ता और सहायक हैं जो कि इनके शासन काल में रणभूमि में मारे गए।

बुरे बादशाह तो करोड़ों आदमियों की हत्या के ज़िम्मेदार और कर्ता हुए हैं।

उन बादशाहों को जो कि "आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत" लेने के सिद्धान्त में विश्वास करते हैं, बिना कारण सिपाहियों को हज़ारों आदमियों के मार डालने की इजाज़त दे देते हैं, जैसे युद्ध में, उन बादशाहों को यह देख कर क्रोधित होने का कोई अधिकार नहीं कि वही सिद्धान्त उन के ऊपर लगाया जाता है जो वह दूसरों पर आज तक लगाते आए हैं। क्यों कि अगर बादशाहों की आज्ञा और अनुमति से लाखों करोड़ों आदमी मारे जाते हैं तो उसके मुक़ाबले में एक भी बादशाह नहीं मारा जाता। राजाओं और महाराजाओं को अलकजेंडर और हमबर्ट के समान हत्यायें देखकर चकित होने की आवश्यकता नहीं। बल्कि, उन्हें आश्चर्य तो इस बात का होना चाहिए कि हत्या करने के इतने अधिक सर्वव्यापी और लगातार उदाहरणों के होते हुए इस प्रकार की हत्यायें इतनी कम क्यों होती हैं।

जनता इतनी अंधी है कि वह यह नहीं समझती कि उसके साथ क्या बरताव हो रहा है। उसे तो केवल यह मालूम होता है कि राजा महाराजाओं को अपनी फ़ौज की बड़ी परवाह रहती है। बादशाह लोग क़वायद के समय, परेड के समय—अपनी अपनी फ़ौज का मुआइना करते हैं

और एक दूसरे के सामने अपने अपने फ़ौज की बड़ी प्रशंसा करते हैं। जनता भी अपने सिपाही भाइयों को देखने जाती है जो चमकदार, बेतुकी और अजीब किस्म की वर्दियां पहने रहते हैं और जो नक़ारे की आवाज़ के होने पर एक दम मशीन के पुर्ज़े के समान काम करने लगते हैं। एक आदमी की आवाज़ पर सभी अपने शरीर को एक क़िस्म की हरकत देते हैं और यह नहीं समझते कि इन बातों का मतलब क्या है। लेकिन इन सब बातों का मतलब बहुत साफ़ और सीधा है ! यह लोग हत्या करने के लिये तैयार किए जाते हैं।

इनके हृदयों को पत्थर बनाया जाता है ताकि यह हत्या कर सकें। राजे महाराजे और राष्ट्रपति ही यह काम करते हैं और इस पर अभिमान करते हैं। यही लोग हैं जो हत्या करने में ख़ास तौर से दिलचस्पी रखते हैं, जिन्होंने हत्या करना अपना पेशा बना रक्खा है जो हमेशा फौजी वर्दी पहने रहते हैं और हत्या करने के शस्त्र-तलवार इत्यादि-लगाए रहते हैं, जो बहुत ज़्यादा नाराज़ और परेशान हो जाते हैं जब इन में से कोई मार डाला जाता है।

बादशाहों का मारा जाना, हुम्बर्ट के मारे जाने के समान निर्दयता के आधार पर भयंकर नहीं कहा जा सकता। क्योंकि बादशाहों की आज्ञानुसार [illegible] हत्याओं से

समान काम करने और बात करने पर विवश है। बुद्धिमान आदमी अगर उनकी जगह पर हो तो वह सब से बड़ी बुद्धिमत्ता की बात यह करेगा कि इस परिस्थिति से अपने आप को अलाहदा कर लेगा। अगर वह उनकी परिस्थिति में रहा तो वह भी इन्हीं के समान हो जायेगा।

संकीर्ण-चित्त, अर्ध-शिक्षित, अभिमानी, जर्मन-नरेश विलियम के दिमाग़ में कुछ भी नहीं, लेकिन जब कभी उसने कोई घृणित से घृणित और अत्यन्त मूर्खतापूर्ण बात कही कि वाह वाह होने लगी। यूरोप भर के अखबारों ने उसकी बात पर टिप्पणी करना शुरू कर दी और उस बात में कोई गम्भीर अर्थ देखने की कोशिश करने लगे। अगर उसने कहा कि "चीन में ईसाई धर्म का प्रचार तलवार के ज़ोर से करना चाहिए" तो लोगों ने हर्ष-ध्वनि करनी शुरू की। अगर उसने कहा कि चीन में जर्मन सेना को कोई गिरफ़्तारियां न करनी चाहिए बल्कि सभी चीनियों को मार डालना चाहिए, तो लोग उसे पागल ख़ाने में बन्द करने के बजाय उसकी प्रशंसा करने लगते हैं और चीन में जाकर उसकी आज्ञा का पालन भी करते हैं। व्यवहार से ही तंग आकर दूसरा निकोलस जब अपने राजसिंहासन से पृथक मनुष्यों को इस दरख्वास्त पर कि उन्हें शासन में प्रतिनिधित्व मिले, यह घोषित करता है कि स्वराज्य के लिए

जाने की आशा करना पागलपन है तो समाचार पत्र और दरबारी लोग उसकी तारीफ़ करते हैं। यदि निकोलस सर्वव्यापी शान्ति क़ायम करने के लिए उस एक भ्रमपूर्ण, मूर्खतापूर्ण और बेतुकी तजवीज़ पेश करता है और साथ ही साथ अपनी सेना बढ़ाने का भी प्रबन्ध करने लगता है तो लोग उसकी बुद्धि और सद्गुणों की बेहद तारीफ़ करते हैं। वह बिना किसी आवश्यकता के, बेमतलब और निर्दयता-पूर्वक सम्पूर्ण राष्ट्र को कष्ट देता है, और अन्त में बोअरों लोगों को क़त्ल करा डालता है, किन्तु इस अत्यन्त अन्याय-पूर्ण, दयाशून्य और सर्वव्यापी शान्ति क़ायम रखने के विरुद्ध काम करते हुए लोग हर तरफ़ से उसकी सैनिक सफलता के लिए और शान्ति की इस नीति को क़ायम रखने के लिये तारीफ़ करने लगते हैं।

इस लिए जनता के कष्टों के लिए और युद्ध की हत्याओं के लिए अलेक्ज़ेन्डर, हम्बर्ट, विलियम, निकोलस, और चैम्बर लेन ज़िम्मेदार नहीं। इन अत्याचारों के लिए ज़िम्मेदार वे लोग हैं, जिन्हों ने अपने आप को इन के अधीन कर प्रजा को घर में रखने का ज़िम्मा लिया है और जो इन बादशाहों को अपनी हैसियत क़ायम रखने में मदद देते हैं। इस लिए अलेक्ज़ेन्डर, निकोलस, विलियम और हम्बर्ट को मारने की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता

इस बात की है कि लोग समाज की उस प्रणाली की
सहायता करना छोड़ दें, जिन से इस प्रकार के आदमी
उत्पन्न होते हैं। वर्तमान प्रणाली को यही लोग क़ायम
रख रहे हैं जो कि अपने स्वार्थ और मूर्खता के कारण
अपनी स्वतंत्रता और इज़्ज़त को ज़रा से माली-फ़ायदे
के लिए बेच डालते हैं।

नीचे की श्रेणी के शासक लोगों को यह बताया जाता
है कि देशसेवा और धर्म का पालन यही है कि वर्तमान
प्रणाली क़ायम रक्खी जाय। इस तालीम के कारण उनका
अन्तःकरण मर जाता है, इसलिए वह अपनी स्वतंत्रता
और आत्माभिमान का खून करके अपने से ऊँचे हाकिम की
आज्ञा के सामने सर झुका देते हैं। इसी तरह से उच्च श्रेणी
के हाकिम लोग भी अन्तःकरण शून्य होने के कारण माली
ज़ाती फ़ायदे के लिए अपनी स्वतंत्रता और आत्माभि-
मान को बेच डालते हैं। यही हाल ऊँचे से ऊँचे शासक
का है।

सर्वोच्च शासक अर्थात् एक राजा या महाराजा शासन
को इसी तरह में क़ायम रखता है। वह अपनी शान और ठाट
के सिवाय अन्य किसी बात की इच्छा नहीं रखता। इ
अपने दरबारियों की चापलूसी से और मनुष्यों को अ
के वश में रखने के कारण वह भी नीच और अन्धका

शून्य हो जाता है। दुनिया के साथ बुराई करते हुए वह यह समझा करता है कि मैं संसार के साथ भलाई करता हूं।

क़ौमों ने स्वयं ही अपने आत्माभिमान को नाश करके इन आदमियों को पैदा किया है और क़ौमें फिर इन्हीं से इनके बुरे और मूर्खता पूर्ण कामों के लिये नाराज़ होती हैं। इनका मानना वैसा ही है जैसा पहिले बच्चे को ख़राब करके उसे सज़ा देना।

जनता के दुःख को नाश करने के लिए, संसार से युद्ध को मिटाने के लिए बहुत कम काम की ज़रूरत है, जनता को वास्तविक स्थिति ज्ञान लेनी चाहिए। जो बात जैसी है वह वैसी ही समझ लेनी चाहिए। अर्थात्, यह तस्लीम कर लेना चाहिए कि फ़ौज हत्या करने का एक ज़रिया है। फ़ौजों को बनाना और क़ायम रखना हत्या करने की तैयारी करना है।

अगर हर एक राजा, महाराजा और प्रेसीडेन्ट इस बात को समझे कि सेना रखना न तो महत्वपूर्ण है और न सम्मानपूर्ण है बल्कि यह बुरा और निन्दनीय काम है— हत्या करने की तैयारी है, और अगर प्रत्येक व्यक्ति यह समझ ले कि टैक्स देना, जिस से फ़ौजों को तनख़्वाहें मिलती हैं, बुरा और निन्दनीय काम है, उससे हत्या करने

में सहायता ही नहीं होती बल्कि हत्या करने का भागी बनना पड़ता है, तो बादशाह और शाहंशाह की यह शक्ति, जिस से लोग खामख्वाह क्रोधित हो जाते हैं और जिसके कारण शासक लोग मारे जाते हैं, आपही आप नष्ट हो जाय।

इस लिए हमें अलेकज़ेण्डर कारनट और हम्बर्ट ऐसे लोगों को न मारना चाहिए। हमें इन्हें हत्या करने की इजाज़त ही न देनी चाहिए। हत्या करने की इनकी आज्ञा को हमें न मानना चाहिये।

अगर लोग आज यह नहीं कर रहे हैं तो उसका कारण यह है कि अपनी रक्षा के लिये गवर्नमेण्ट लोगों को माया मोह में फंसाए रहती है। हम हत्याएं कर के कुछ नहीं कर सकते। हत्याएं करने से यह माया-मोह और प्रबल हो जाता है। हम इस मोह को त्याग कर के ही अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं।

मैं इस लेख से इसी मोह के मिटाने का प्रयत्न कर रहा हूं।

—लिओ टालस्टाय

# महात्मा टालस्टाय की संक्षिप्त जीवनी

रूस देश के तुला नगर के दक्षिण में यसयना पोलियाना नाम का एक गाँव है। महात्मा काउण्ट लिओ टालस्टाय का जन्म यहीं एक प्रतिष्ठित कुटुम्ब में २८ अगस्त सन् १८२८ ई० को हुआ था। इन की माता 'मेरी' शाहज़ादी थी और इन के पिता काउंट निकोलस भी शाही ख़ानदान के थे। लिओ जब तीन वर्ष के थे, इनकी माता का देहान्त हो गया। इस लिए इन के पालन-पोषण का भार इन की चाची पर पड़ा। माता के मरने के ६ वर्ष बाद इनके पिता का भी देहान्त होगया, इस लिए ६ वर्ष की अवस्था ही में लिओ माता-पिता हीन हो गये थे। बाल्यावस्था में लिओ में कोई विशेषता नहीं देख पड़ती थी। विचारशील अवश्य मालूम होते थे और अकसर अपने साथियों से अलाहिदा होकर अपना बहुत कुछ समय एकान्त में बिताते थे।

बाल्यावस्था में यह देख कर कि मृत्यु सब के सर सवार रहती है, इन्होंने भविष्य का विचार छोड़ कर वर्तमान काल में स्वतंत्रता-पूर्वक सुख से जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया था।

स० १८४३ में जब यह काज़ान यूनीवरसिटी में दाख़िल हुए, इन्हें हर एक प्रकार के सुख प्राप्त करने का बड़ा अच्छा

अवसर हाथ आ गया, क्योंकि काज़ान नगर उस ज़माने में हर एक प्रकार के सुख से सम्पन्न था। नाच-रंग, थियेटर तमाशा और अन्य व्यसन के पदार्थ जितने वहां पाये जाते थे, किसी और नगर में नहीं पाये जाते थे।

काज़ान यूनीवरसिटी के अमीर विद्यार्थी नगर के सुखों को सब से ज़ियादा प्राप्त किया करते थे। लियो टालस्टाय भी अपना बहुत समय ऐशो आराम में गुज़ारा करते थे। इसलिए पूर्वीय भाषा का अध्ययन, जिस के लिए यह काज़ान यूनीवरसिटी में आये थे, इन से न हो सका इस लिए सन् १८४५ में इन्हों ने क़ानून पढ़ना शुरू किया किन्तु इस में भी इन्हें सफलता न हुई। अन्त में इन्हों ने धर्म, इतिहास और क़ानून पर अपनी ओर से किताबें पढ़नी शुरू कीं, जिस से इन के विचारों में बड़ी तबदीलियां आ गईं किन्तु यूनीवरसिटी में इन की हाज़री कभी ठीक न हुई। अन्त में यह समझ कर कि समय व्यर्थ जा रहा है सन् १८४७ ई० में लियो अपने मकान वापस आ गये।

लियो टालस्टाय अपनी ज़मींदारी के किसानों की दशा को सुधारने का दृढ़ विचार कर के वापस आये थे। किसानों में अकाल और रोगों के समाचार इन्हें बाल्यावस्था से ही मिलते रहते थे, इस लिए यह इनके सुधार के लिए प्रयत्न करने लगे। कुछ दिन इसमें बीते। बाद को इन्होंने सन् १८५१

ई० में फ़ौज में नौकरी करली और काकेशश पहाड़ की ओर लड़ाई के लिये भेज दिये गये। यहां पर कई वर्ष रहे और यहां पर इन्हों ने परोपकार और मनुष्य-सेवा के आदर्शों के महत्व का अनुभव किया. जिसे इन्हों ने 'कज़ाक' नाम की गल्प में बयान किया है। सः १८५४ में क्रिमियन युद्ध का प्रारम्भ हुआ, टालस्टाय युद्ध में जाने के लिये भरती हो गये। इसी युद्ध में प्राप्त किये हुए अनुभवों के आधार पर इन्होंने सिवास्टापूल नाम की पुस्तक लिखी. जिसके कारण इनका नाम लेखकों में प्रसिद्ध हो गया।

सिवास्टापूल से लौट कर यह सेंट पीटर्सबर्ग आये। युद्ध के निर्दयता पूर्ण दृश्य को देख कर यह इतने प्रभावित हुए थे कि इन्हो ने फ़ौज से अपना नाम कटा लिया।

टालस्टाय का विवाह १३ सितम्बर १८६१ में एक डाक्टर की पुत्री के साथ हुआ था, जिन्हें यह पहले से जानते थे। विवाह के बाद यह बहुत आनन्द पूर्वक रहने लगे, किन्तु कुछ ही दिनों के बाद इन्हों ने अपने अनुभवों और विचारों के आधार पर पुस्तकें लिखनी शुरू कर दीं और फ़िलासफ़ी की शिक्षा में यह अपना समय व्यतीत करने लगे। फ़िलासफ़ी आदि के पढ़ने का प्रभाव यह हुआ कि इनका जीवन दिन प्रति दिन सादा और पवित्र होता गया। अन्त में इन्होंने यह निश्चय किया कि अमीर रहना या जायदाद रखना पाप है।

इन्हीं ने किसान के जीवन को अपने जीवन का आदर्श माना। इनका यह सिद्धान्त हो गया कि जो आदमी जितना ही कम अवलम्बन रक्खे, उतनाही अच्छा है। इस लिये सन् १८८८ में यह अपनी जायदाद और ज़मींदारी इत्यादि से विरक्त होगये और अपना समय स्वाध्याय और मनन में व्यतीत करने लगे। दुखियों-दरिद्रियों की सहायता में भी यह अपना बहुत कुछ समय लगाते थे। इन्हीं ने 'रिज़रेक्शन' नाम की एक पुस्तक ईसाई धर्म के ख़िलाफ़ लिखी थी, जिसके कारण इन्हें पादरियों ने २२ फ़रवरी सन् १९०१ को ज्ञाति से निकाल दिया था। आस्तापोवो नगर में, जहां यह एकान्तवास के लिये गये थे, २० नवम्बर सन् १९१० ई० को इनका देहान्त हो गया।

## 'सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-माला'

की

## प्रकाशित पुस्तकें

१ देश का दुखी अंग। लेखक, पं० रामनरेश त्रिपाठी। इस पुस्तक में भारतीय कृषकों की दशा का जीता-जागता चित्र और उनके उद्धार के उपायों का वर्णन है। पृष्ठ सं० ८८ मूल्य केवल ≡) आना।

२ सञ्जीवनी। लेखक सुकवि सनुदास्य। इस पुस्तक में मुर्दा दिलों में जान डालने वाली, बाबू दीनानाथ खन्ना द्वारा पुरस्कृत मर्म-स्पर्शी कविताओं का अपूर्व संग्रह है। पृष्ठ संख्या १४२ मूल्य केवल ।≈) आना

३ सनयात सेन। लेखक, पं० नरदेवशर्मा, विद्यालंकार। यह पुस्तक चीन महादेश के उद्धारकर्ता, कर्मवीर डाक्टर सनयात सेन का जीवन-चरित्र है। इसके पढ़ने से निर्बलों में बल, निराशों में आशा, मृतकों में जीवन, देशद्रोहियों में देशप्रेम अकर्मण्यों में कर्मण्यता उत्पन्न होती है। अवश्य पढ़िए पृष्ठ संख्या ११२ मूल्य केवल ।) ।

मिलने का पता—

व्यवस्थापक,

'सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-माला' कार्यालय,

कानपुर।

इन्होंने किसान के जीवन को अपने जीवन का आदर्श माना। इनका यह सिद्धान्त हो गया कि जो आदमी जितना ही कम ज़रूरियात रक्खे, उतनाही अच्छा है। इस लिये स० १८८८ में यह अपनी जायदाद और ज़मींदारी इत्यादि से विरक्त होगये और अपना समय स्वाध्याय और मनन में व्यतीत करने लगे। दुखियों-दरिद्रियों की सहायता में भी यह अपना बहुत कुछ समय लगाते थे। इन्होंने 'रिज़रकशन' नाम की एक पुस्तक ईसाई धर्म के ख़िलाफ़ लिखी थी, जिसके कारण इन्हें पादरियों ने २२ फ़रवरी स०१९०१ को ज़ात से निकाल दिया था। आस्तापोवो नगर में, जहां यह एकान्तवास के लिये गये थे, २० नवम्बर स० १९१० ई० को इनका देहांत हो गया।

# 'सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-माला'

## प्रकाशित पुस्तकें

१ देश का दुखी अंग। लेखक, पं० रामनरेश त्रिपाठी। इस पुस्तक में भारतीय कृषकों की दशा का दीनता-व्यंजक चित्र और उनके उद्धार के उपायों का वर्णन है। पृष्ठ सं० ८८ मूल्य केवल ≈) आना।

२ कल्लोलिनी। लेखक सुकवि सनेही। इस पुस्तक में मुर्दा दिलों में जान डालने वाली, बाबू देवीनाथ खन्ना द्वारा पुरस्कृत मर्म-स्पर्शी कविताओं का अपूर्व संग्रह है। पृष्ठ संख्या १४२ मूल्य केवल ।=) आना

३ सनयात सेन। लेखक, पं० सुखदेवशर्मा, विद्यालंकार। यह पुस्तक चीन महादेश के उद्धारकर्ता, धर्मवीर डाक्टर सनयात सेन का जीवन-चरित है। इसके पढ़ने से निबलों में बल, निराशों में आशा, मृतकों में जीवन, देश द्रोहियों में देश प्रेम अकर्मण्यों में कर्मण्यता उत्पन्न होती है। अवश्य पढ़िए पृष्ठ संख्या ११२ मूल्य केवल ।) ।

इन्होंने किसान के जीवन को अपने जीवन का आदर्श माना। इनका यह सिद्धान्त हो गया कि जो आदमी जितना ही कम ज़रूरियात रक्खे, उतनाही अच्छा है। इस लिये स० १८८८ में यह अपनी जायदाद और ज़मींदारी इत्यादि से विरक्त होगये और अपना समय स्वाध्याय और मनन में व्यतीत करने लगे। दुखियों-दरिद्रियों की सहायता में भी यह अपना बहुत कुछ समय लगाते थे। इन्होंने 'रिज़रेक्शन' नाम की एक पुस्तक ईसाई धर्म के ख़िलाफ़ लिखी थी, जिसके कारण इन्हें पादरियों ने २२ फ़रवरी स० १९०१ को ज़ात से निकाल दिया था। आस्तापोवो नगर में, जहां यह एकांतवास के लिये गये थे, २० नवम्बर स० १९१८ ई० को इनका देहांत हो गया।

## 'सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-माला' में

## प्रकाशित पुस्तकें

१ देश का दुखी अंग। लेखक, पं० रामनरेश त्रिपाठी। इस पुस्तक में भारतीय कृषकों की दशा का जीता-जागता चित्र और उनके उद्धार के उपायों का वर्णन है। पृष्ठ सं० ८८ मूल्य केवल ≡) आना।

२ सञ्जीवनी। लेखक सुकवि समुदाय। इस पुस्तक में मुर्दा दिलों में जान डालने वाली, बाबू वेणीमाधव खन्ना द्वारा पुरस्कृत मर्म-स्पर्शिनी कविताओं का अपूर्व संग्रह है। पृष्ठ संख्या १४३ मूल्य केवल ।<) आना

३ सनयात सेन। लेखक, पं० भूदेवशर्म्मा, विद्यालंकार। यह पुस्तक चीन महादेश के उद्धारकर्ता, कर्मवीर डाक्टर सनयात सेन का जीवन-चरित्र है। इसके पढ़ने से निर्बलों में बल, निराशों में आशा, मृतकों में जीवन, देश द्रोहियों में देश प्रेम अकर्मण्यों में कर्मण्यता उत्पन्न होती है। अवश्य पढ़िए पृष्ठ संख्या ११२ मूल्य केवल ।) ।

मिलने का पता:—

व्यवस्थापक,
'सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-माला' कार्यालय,
कानपुर।

इन्होंने मसीह के जीवन को अपने जीवन का आदर्श माना। इनका यह सिद्धान्त हो गया कि जो आदमी जितना ही कम ज़रूरियात रक्खे, उतनाही अच्छा है। इस लिये स० १८८८ में यह अपनी जायदाद और ज़मींदारी इत्यादि से विरक्त होगये और अपना समय स्वाध्याय और मनन में व्यतीत करने लगे। दुखियों-दरिद्रियों की सहायता में भी यह अपना बहुत कुछ समय लगाते थे। इन्होंने 'रिज़रेक्शन' नाम की एक पुस्तक ईसाई धर्म के खिलाफ़ लिखी थी, जिसके कारण इन्हें पादरियों ने २२ फ़रवरी स० १९०१ को ज़ात से निकाल दिया था। आस्तापोवो नगर में, जहां यह एकांतवास के लिये गये थे, २० नवम्बर स० १९१० ई० को इनका देहांत हो गया।

इन्होंने किसान के जीवन को अपने जीवन का आदर्श माना। इनका यह सिद्धान्त हो गया कि जो आदमी जितना ही कम ज़रूरियात रक्खे, उतनाही अच्छा है। इस लिये सन् १८८८ में यह अपनी जायदाद और ज़मींदारी इत्यादि से विरक्त होगये और अपना समय स्वाध्याय और मनन में व्यतीत करने लगे। दुखियों-दरिद्रियों की सहायता में भी यह अपना बहुत कुछ समय लगाते थे। इन्होंने 'रिज़रेक्शन' नाम की एक पुस्तक ईसाई धर्म के ख़िलाफ़ लिखी थी, जिसके कारण इन्हें पादरियों ने २२ फ़रवरी सन् १९०१ को ज़ात से निकाल दिया था। आस्तापोवो नगर में, जहां यह एकान्तवास के लिये गये थे, २० नवम्बर सन् १९१० ई० को इनका देहांत हो गया।

# 'सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-माला'
## की
# प्रकाशित पुस्तकें

१ देश का दुखी अंग। लेखक, पं० रामनरेश त्रिपाठी। इस पुस्तक में भारतीय कृषकों की दशा का जीता-जागता चित्र और उनके उद्धार के उपायों का वर्णन है। पृष्ठ सं० ८८ मूल्य केवल ≈) आना।

२ कर्म्मावली। लेखक सुकवि समुदाय। इस पुस्तक में मुर्दा दिलों में जान डालने वाली, बाबू देवीनारायण सन्ना शारापुरस्कृत मर्म-स्पर्शी कविताओं का अपूर्व संग्रह है। पृष्ठ संख्या १४३ मूल्य केवल ।=) आना

३ सनयात सेन। लेखक. पं० भूदेवशर्म्मा, विद्यालंकार। यह पुस्तक चीन महादेश के उद्धारकर्ता, कर्मवीर डाक्टर सनयात सेन का जीवन-चरित्र है। इसके पढ़ने से निर्बलों में बल, निराशों में आशा, मृतकों में जीवन, देश द्रोहियों में देश प्रेम अकर्मण्यों में कर्म-ण्यता उत्पन्न होती है। अवश्य पढ़िए पृष्ठ संख्या ११२ मूल्य केवल ।)।

मिलने का पता—

व्यवस्थापक,

'सस्ती-हिन्दी-पुस्तक-माला' कार्यालय,

कानपुर।